PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट
UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

SANSKRIT MARGDARSHIKA BOOKLET FEATURES

One-Stop Syllabus Coverage

Unit-Wise 'What to Study' Focus

- In-Depth Textual Study
- Concept Maps & Flowcharts
- Technical-Term Glossary

Exam-Oriented Tips

@Professors Adda
+91 7690022111

Ready-Made Study Kit with Support

Updated to 2025 Edition

Expert-Curated by Professors Adda

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट संस्कृत मार्गदर्शिका पुस्तक

इकाई-I: वैदिक-साहित्य

क्या अध्ययन करें (इन टॉपिक पर अत्यधिक ध्यान दें)

- (क) वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय
  - **वेदों का काल:** मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनित्ज़ के विचारों के साथ-साथ भारतीय परंपरागत विचारों का अध्ययन करें। विभिन्न विद्वानों द्वारा वैदिक काल के निर्धारण के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न पद्धतियों और तर्कों को समझें।
  - **संहिता साहित्य:** चारों संहिताओं (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) की सामान्य समझ - उनकी प्रकृति, सामग्री और महत्व।
  - **संवाद सूक्त:** पुरुरवा-उर्वशी, यम-यमी, सरमा-पणि, और विश्वामित्र-नदी सूक्तों का विशिष्ट अध्ययन। उनकी कथा, पात्रों और दार्शनिक या सामाजिक निहितार्थों पर ध्यान दें।
  - **ब्राह्मण साहित्य:** प्रत्येक वेद से जुड़े प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथों की प्रकृति , सामग्री (कर्मकांडीय स्पष्टीकरण, व्युत्पत्ति, मिथक) और उदाहरण।
  - **आरण्यक साहित्य:** ब्राह्मणों और उपनिषदों के बीच उनकी संक्रमणकालीन प्रकृति , कर्मकांडों के ध्यान और दार्शनिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना।
  - **वेदांग:** वैदिक अध्ययन के छह सहायक विषय : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। प्रत्येक के उद्देश्य और प्रमुख ग्रंथों/अवधारणाओं को समझें।

कैसे अध्ययन करें (प्रभावी और विस्तृत रणनीतियाँ):

- **वैदिक काल निर्धारण का तुलनात्मक विश्लेषण:** विभिन्न विद्वानों और उनके प्रस्तावित तिथियों की तुलनात्मक तालिका बनाएं, उनके तर्कों (भाषाई, खगोलीय, आदि) का आधार नोट करें। पारंपरिक भारतीय दृष्टिकोण को भी समझें।
- **संहिताएं:** प्रत्येक संहिता के लिए, उसकी प्राथमिक फोकस (जैसे, ऋग्वेद - देवताओं की स्तुति; यजुर्वेद - यज्ञीय सूत्र; सामवेद - मंत्र; अथर्ववेद - मंत्र, दैनिक जीवन की चिंताएं) पर नोट्स बनाएं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **संवाद सूक्त:** निर्धारित संवाद सूक्तों के अनुवाद और सारांश पढ़ें। इन संवादों में उठाए गए नाटकीय तत्वों, पात्रों की प्रेरणाओं और किसी भी अंतर्निहित दार्शनिक या नैतिक प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करें।
- **ब्राह्मण और आरण्यक:** संहिताओं के संबंध में उनके उद्देश्य को समझें और वैदिक कर्मकांडों और दर्शन की व्याख्या में उनकी भूमिका को समझें। प्रत्येक वेद से जुड़े महत्वपूर्ण ब्राह्मण और आरण्यक ग्रंथों की सूची बनाएं।
- **वेदांग:** प्रत्येक वेदांग के लिए, वैदिक ग्रंथों को संरक्षित करने और समझने में उसके विशिष्ट कार्य को समझें। प्रत्येक से जुड़े प्रमुख प्राचीन विद्वानों या ग्रंथों के नाम जानें (जैसे, व्याकरण के लिए पाणिनि, निरुक्त के लिए यास्क, छंद के लिए पिंगल)।
- **शब्दावली की सूची :** महत्वपूर्ण वैदिक शब्दों (जैसे, ऋत, सत्य, यज्ञ, देव, ऋषि, मंत्र) की एक शब्दावली बनाएं।

परीक्षा के लिए सुझाव (MCQ फोकस):

- **वैदिक काल निर्धारण पर विद्वान :** प्रश्न अक्सर विद्वानों को उनकी प्रस्तावित तिथियों या उनके द्वारा उपयोग किए गए प्राथमिक साक्ष्यों से मिलाने के लिए कहते हैं।
- **संहिताओं की विषयवस्तु:** चारों वेदों में से प्रत्येक की मुख्य विशेषताओं या सामग्री के प्रकार की पहचान करने में सक्षम हों।
- **संवाद सूक्त:** MCQ निर्धारित संवाद सूक्तों के मुख्य पात्रों, केंद्रीय विषय, या प्रसिद्ध पंक्तियों/उद्धरणों पर केंद्रित हो सकते हैं।
- **ब्राह्मण/आरण्यक का उद्देश्य :** कर्मकांडों की व्याख्या (ब्राह्मण) और कर्मकांडों की दार्शनिक व्याख्या (आरण्यक) में उनकी भूमिका को समझें।
- **वेदांग:** प्रत्येक वेदांग को उसके विषय क्षेत्र से मिलाएं (जैसे, शिक्षा - ध्वन्यात्मकता; निरुक्त - व्युत्पत्ति)। प्रश्न वेदों के "मुख" (व्याकरण) या "नेत्र" (ज्योतिष) के बारे में भी पूछ सकते हैं।
- **ग्रंथों की पहचान:** किसी दिए गए वैदिक पाठ की पहचान करने के लिए तैयार रहें कि वह संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक या उपनिषद साहित्य से संबंधित है।

संस्कृत E-Booklet INDEX

इकाई-I: वैदिक-साहित्य

- **(क) वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय :-**
  - वेदों का काल :
    - मैक्समूलर
    - ए. वेबर
    - जैकोबी
    - बालगंगाधर तिलक
    - एम. विन्टरनित्ज
    - भारतीय परम्परागत विचार
  - संहिता साहित्य
  - संवाद सूक्त :
    - पुरुरवा-उर्वशी
    - यम-यमी
    - सरमा-पणि
    - विश्वामित्र-नदी
  - ब्राह्मण साहित्य
  - आरण्यक साहित्य
  - वेदांग :
    - शिक्षा
    - कल्प

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- व्याकरण
- निरुक्त
- छन्द
- ज्योतिष

इकाई-II: वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- **(ख) वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :-**
  1. **निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :-**
     - ऋग्वेदः -
       - अग्नि (1.1)
       - वरुण (1.25)
       - सूर्य (1.125)
       - इन्द्र (2.12)
       - उषस् (3.61)
       - पर्जन्य (5.83)
       - अक्ष (10.34)
       - ज्ञान (10.71)
       - पुरुष (10.90)
       - हिरण्यगर्भ (10.121)
       - वाक् (10.125)
       - नासदीय (10.129)
     - शुक्लयजुर्वेदः -
       - शिवसंकल्प, अध्याय 34 (1-6)
       - प्रजापति, अध्याय - 23 (1-5)

- अथर्ववेदः -
  - राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29)
  - काल (10.53)
  - पृथिवी (12.1)

2. **ब्राह्मण-साहित्य :**
   - प्रतिपाद्य विषय
   - विधि एवं उसके प्रकार
   - अग्निहोत्र
   - अग्निष्टोम
   - दर्शपूर्णमास यज्ञ
   - पंचमहायज्ञ
   - आख्यान (शुनःशेप, वाङ्मनस्)

3. **उपनिषद्-साहित्य :** निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन :
   - ईश
   - कठ
   - केन
   - बृहदारण्यक
   - तैत्तिरीय
   - श्वेताश्वतर

4. **वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति :**
   - ऋक्प्रातिशाख्य : निम्नलिखित परिभाषाएँ -
     - समानाक्षर
     - सन्ध्यक्षर
     - अघोष

- सोष्म
- स्वरभक्ति
- यम
- रक्त
- संयोग
- प्रगृह्य
- रिफित

- निरुक्त (अध्याय 1 तथा 2)
  - चार पद नाम विचार
  - आख्यात विचार
  - उपसर्गों का अर्थ
  - निपात की कोटियाँ
- निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन
- निर्वचन के सिद्धान्त
- निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति :
  - आचार्य
  - वीर
  - ह्रद
  - गो
  - समुद्र
  - वृत्र
  - आदित्य
  - उषस्
  - मेघ
  - वाक्

- उदक
- नदी
- अश्व
- अग्नि
- जातवेदस्
- वैश्वानर
- निघण्टु

- निरुक्त (अध्याय 7 दैवत काण्ड)
- वैदिक स्वर :
  - उदात्त
  - अनुदात्त
  - स्वरित
- वैदिक व्याख्या पद्धति:
  - प्राचीन
  - अर्वाचीन

इकाई-III: दर्शन-साहित्य

- **(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय :**
  - प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)
    - प्रमाणमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)
    - तत्त्वमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)

- आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)

इकाई-IV: दर्शन-साहित्य (विशिष्ट अध्ययन)

- **(ख) दर्शन-साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :**
  - ईश्वरकृष्ण; सांख्यकारिका:
    - सत्कार्यवाद
    - पुरुषस्वरूप
    - प्रकृतिस्वरूप
    - सृष्टिक्रम
    - प्रत्ययसर्ग
    - कैवल्य
  - सदानन्द; वेदान्तसार :
    - अनुबन्ध-चतुष्ट्य
    - अज्ञान
    - अध्यारोप-अपवाद
    - लिंगशरीरोत्पात्ति
    - पंचीकरण
    - विवर्त
    - महावाक्य
    - जीवन्मुक्ति
  - अन्नंभट्ट; तर्कसंग्रह / केशव मिश्र; तर्कभाषा :
    - पदार्थ
    - कारण

- प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द)
  - प्रत्यक्ष प्रमाण
  - अनुमान प्रमाण
  - उपमान प्रमाण
  - शब्द प्रमाण
- प्रामाण्यवाद
- प्रमेय

- लौगाक्षिभास्कर; अर्थसंग्रह
- पतंजलि योगसूत्र, (व्यासभाष्य):
  - चित्तभूमि
  - चित्तवृत्तियाँ
  - ईश्वर का स्वरूप
  - योगाङ्ग
  - समाधि
  - कैवल्य
- बादरायण; ब्रह्मसूत्र 1.1 (शांकरभाष्य)
- विश्वनाथपंचानन; न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)
- सर्वदर्शनसंग्रह;
  - जैनमत
  - बौद्धमत

इकाई-V: व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

- **(क) सामान्य-परिचय :**
  - निम्नलिखित आचार्यों का परिचय -

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

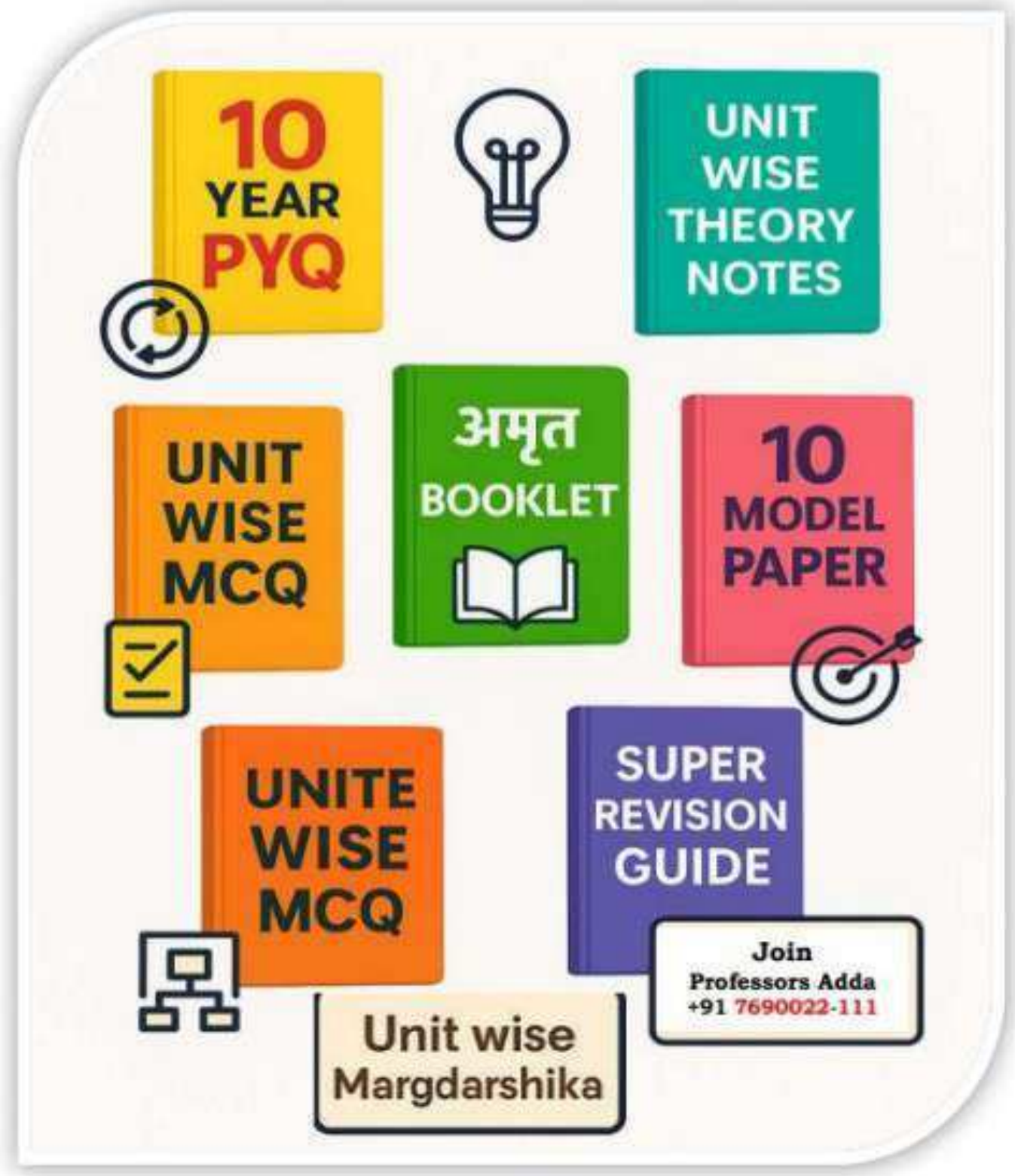

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- पाणिनि
- कात्यायन
- पतंजलि
- भर्तृहरि
- वामनजयादित्य
- भट्टोजिदीक्षित
- नागेशभट्ट
- जैनेन्द्र
- कैय्यट
- शाकटायन
- हेमचन्द्रसूरि
- सारस्वतव्याकरणकार

- पाणिनीय शिक्षा
- भाषाविज्ञान :
  - भाषा की परिभाषा
  - भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)
    - आकृतिमूलक वर्गीकरण
    - पारिवारिक वर्गीकरण
  - ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में)
    - स्पर्श
    - संघर्षी
    - अर्धस्वर
    - स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में)
  - मानवीय ध्वनियंत्र

- ध्वनि परिवर्तन के कारण
- ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर)
  - ग्रिम नियम
  - ग्रासमान नियम
  - वर्नर नियम
- अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण
- वाक्य का लक्षण व भेद
- भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय
- वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर
- भाषा तथा वाक् में अन्तर
- भाषा तथा बोली में अन्तर
-

इकाई-VI: व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन

- **(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन :**
  - परिभाषाएँ -
    - संहिता
    - संयोग
    - गुण
    - वृद्धि
    - प्रातिपदिक
    - नदी
    - घि
    - उपधा
    - अपृक्त

- गति
- पद
- विभाषा
- सवर्ण
- टि
- प्रगृह्य
- सर्वनामस्थान
- भ
- सर्वनाम
- निष्ठा

- सन्धि - (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
  - अच् सन्धि
  - हल् सन्धि
  - विसर्ग सन्धि
- सुबन्त -
  - अजन्त - राम, सर्व (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु।
  - हलन्त - लिहू, विश्ववाह, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युष्मद्।
- समास - (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
  - अव्ययीभाव
  - तत्पुरुष
  - बहुव्रीहि
  - द्वन्द्व

- तद्धित - (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
  - अपत्यार्थक
  - मत्वर्थीय
- तिङन्त -
  - भू
  - एध्
  - अद्
  - अस्
  - हु
  - दिव्
  - षुञ्
  - तुद्
  - तन्
  - कृ
  - रुध्
  - क्रीञ्
  - चुर्
- प्रत्ययान्त -
  - णिजन्त
  - सन्नन्त
  - यङन्त
  - यङ्लुगन्त
  - नामधातु
- कृदन्त -
  - तव्य / तव्यत्

- अनीयर्
- यत्
- ण्यत्
- क्यप्
- शतृ
- शानच्
- क्त्वा
- क्तवतुः
- तुमुन्
- णमुल्

- स्त्रीप्रत्यय - (लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार)
- कारक प्रकरण - (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- महाभाष्य (पस्पशाह्निक) -
  - शब्दपरिभाषा
  - शब्द एवं अर्थ संबंध
  - व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य
  - व्याकरण की परिभाषा
  - साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम
  - व्याकरण पद्धति
- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) -
  - स्फोट का स्वरूप
  - शब्द-ब्रह्म का स्वरूप
  - शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ
  - स्फोट एवं ध्वनि का संबंध

- शब्द-अर्थ संबंध
- ध्वनि के प्रकार
- भाषा के स्तर

इकाई-VII: संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय

- **(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय :**
  - कवि एवं नाटककार:
    - भास
    - अश्वघोष
    - कालिदास
    - शूद्रक
    - विशाखदत्त
    - भारवि
    - माघ
    - हर्ष
    - बाणभट्ट
    - दण्डी
    - भवभूति
    - भट्टनारायण
    - बिल्हण
    - श्रीहर्ष
    - अम्बिकादत्तव्यास
    - पंडिता क्षमाराव
    - वी. राघवन्

- श्रीधरभास्कर वर्णेकर

- काव्यशास्त्र :
  - रससम्प्रदाय
  - अलंकारसम्प्रदाय
  - रीतिसम्प्रदाय
  - ध्वनिसम्प्रदाय
  - वक्रोक्तिसम्प्रदाय
  - औचित्यसम्प्रदाय
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र :
  - अरस्तू
  - लॉन्जाइनस
  - क्रोचे

इकाई-VIII: संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय

- **(ख) निम्नलिखित का विशिष्ट अध्ययन :**
  - पद्य :
    - बुद्धचरितम् (प्रथम सर्ग)
    - रघुवंशम् (प्रथमसर्ग)
    - किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)
    - शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग)
    - नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
  - नाट्य :
    - स्वप्नवासवदत्तम्
    - अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- वेणीसंहारम्
- मुद्राराक्षसम्
- उत्तररामचरितम्
- रत्नावली
- मृच्छकटिकम्

- गद्य :
  - दशकुमारचरितम् (अष्टम-उच्छ्वास)
  - हर्षचरितम् (पञ्चम-उच्छ्वास)
  - कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- चम्पूकाव्य :
  - नलचम्पूः (प्रथम-उच्छ्वास)
- साहित्यदर्पणः
  - काव्यपरिभाषा
  - काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन
  - शब्दशक्ति - (संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)
    - संकेतग्रह
    - अभिधा
    - लक्षणा
    - व्यंजना
  - काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद)
  - श्रव्यकाव्य (गद्य, पद्य, मिश्र काव्य-लक्षण)
- काव्यप्रकाशः
  - काव्यलक्षण
  - काव्यप्रयोजन
  - काव्यहेतु

- काव्यभेद
- शब्दशक्ति
- अभिहितान्वयवाद
- अन्विताभिधानवाद
- रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श
- रसदोष
- काव्यगुण
- व्यंजनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)
- अंलकारः-
  - वक्रोक्ति
  - अनुप्रास
  - यमक
  - श्लेष
  - उपमा
  - रूपक
  - उत्प्रेक्षा
  - समासोक्ति
  - अपनुति
  - निदर्शना
  - अर्थान्तरन्यास
  - दृष्टान्त
  - विभावना
  - विशेषोक्ति
  - स्वभावोक्ति
  - विरोधाभास

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- संकर
- संसृष्टि

- ध्वन्यालोकः (प्रथम उद्योत)
- वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)
- भरत-नाट्यशास्त्रम् (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)
- दशरूपकम् (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)
- छन्द परिचय -
  - आर्या
  - अनुष्टुप्
  - इन्द्रवज्रा
  - उपेन्द्रवज्रा
  - वसन्ततिलका
  - उपजाति
  - वंशस्थ
  - द्रुतविलम्बित
  - शालिनी
  - मालिनी
  - शिखरिणी
  - मन्दाक्रान्ता
  - हरिणी
  - शार्दूलविक्रीडित
  - स्रग्धरा

इकाई-IX: पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

- **(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचयः**
  - रामायण -
    - विषयवस्तु
    - काल
    - रामायणकालीन समाज
    - परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत
    - साहित्यिक महत्त्व
    - रामायण में आख्यान
  - महाभारत -
    - विषयवस्तु
    - काल
    - महाभारतकालीन समाज
    - परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत
    - साहित्यिक महत्त्व
    - महाभारत में आख्यान
  - पुराण -
    - पुराण की परिभाषा
    - महापुराण
    - उपपुराण
    - पौराणिक सृष्टि-विज्ञान
    - पौराणिक आख्यान
  - प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय
  - अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय
  - लिपि :
    - ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त

- अभिलेख का सामान्य परिचय

इकाई-X: पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

- **(ख) निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन**
  - कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (प्रथम-विनयाधिकारिक)
  - मनुस्मृतिः - (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
  - याज्ञवल्क्यस्मृतिः - (व्यवहाराध्याय)
  - लिपि तथा अभिलेख -
    - गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि
    - अशोक के अभिलेख:
      - प्रमुख शिलालेख
      - प्रमुख स्तम्भलेख
    - मौर्योत्तरकालीन अभिलेख:
      - कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख
      - रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख
      - खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
    - गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख:
      - समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख
      - यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख
      - हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख
      - पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year

- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend

- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

संस्कृत इकाई-1 E-Booklet SAMPLE

वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ:

वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृत (जो पाणिनी के 'अष्टाध्यायी' द्वारा मानकीकृत की गई थी) से भिन्न है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- **स्वर:** वैदिक संस्कृत में स्वरों (उच्चारण की ऊँचाई-नीचाई) का विशेष महत्त्व है। इसमें उदात्त (उच्च स्वर), अनुदात्त (निम्न स्वर) और स्वरित (मध्य स्वर) का प्रयोग होता है। इन स्वरों के सही उच्चारण से मंत्रों का अर्थ और शक्ति प्रभावित होती है।
- **धातु रूप और क्रियापद:** वैदिक संस्कृत में अनेक ऐसे धातु रूप, क्रियापद और व्याकरणिक संरचनाएँ मिलती हैं जो लौकिक संस्कृत में या तो अनुपलब्ध हैं या भिन्न रूप में प्रयुक्त होती हैं। उदाहरण के लिए, लौकिक संस्कृत की अपेक्षा इसमें आत्मनेपद का प्रयोग अधिक होता है।
- **प्रत्यय:** विभिन्न प्रकार के कृत् और तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग वैदिक संस्कृत को विशेष जटिलता और अर्थ की गहराई प्रदान करता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **समास:** बड़े-बड़े और जटिल समासों का प्रयोग वैदिक साहित्य में आम है, जिससे भाषा में संक्षिप्तता और अर्थ की गहनता आती है।
- **रूपात्मकता:** वैदिक संस्कृत की रूपात्मक (मॉर्फोलॉजिकल) संरचना अधिक जटिल और लचीली है, जिसमें शब्दों के विभिन्न रूपों का प्रयोग अधिक स्वतंत्रता से होता है।

PAID STUDENTS BENEFITS

✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

वेदों का काल

वेदों के काल निर्धारण को लेकर विभिन्न विद्वानों में काफी मतभेद हैं, क्योंकि उनके पास निश्चित ऐतिहासिक या पुरातात्विक प्रमाणों का अभाव है। विभिन्न विद्वानों ने भाषाई, साहित्यिक, ज्योतिषीय और पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर अपने मत प्रस्तुत किए हैं।

• मैक्समूलर (Max Müller):

- **गणना विधि:** जर्मन भारतविद् मैक्समूलर ने वेदों का काल निर्धारण मुख्यतः भाषाई

और साहित्यिक विकास के आधार पर किया । उन्होंने वैदिक साहित्य के क्रमिक विकास को कुछ कालों में विभाजित किया:

- **सूत्र काल:** 600-200 ईसा पूर्व।
- **ब्राह्मण काल:** 800-600 ईसा पूर्व।
- **मंत्र काल:** 1000-800 ईसा पूर्व।

- **मैक्समूलर का काल निर्धारण:** इस आधार पर उन्होंने ऋग्वेद संहिता का काल लगभग 1200-600 ईसा पूर्व निर्धारित किया । उनका मानना था कि बौद्ध धर्म के उदय (लगभग 500 ईसा पूर्व) से कुछ सौ साल पहले वैदिक साहित्य का विकास हुआ होगा।
- **आलोचना:** मैक्समूलर की काल निर्धारण विधि की आलोचना की जाती है क्योंकि यह पूरी तरह से साहित्यिक विकास पर आधारित है और इसमें ऐतिहासिक या ज्योतिषीय प्रमाणों की कमी है। यह एक अनुमानित कालक्रम है जो किसी निश्चित प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि भाषा के विकास की गति पर उनके अपने आकलन पर निर्भर करता है।

ए. वेबर (A. Weber):

- **ज्योतिषीय प्रमाण:** ए. वेबर ने वेदों के काल निर्धारण के लिए ज्योतिषीय प्रमाणों का सहारा लिया ।
- **उनका काल निर्धारण:** उनके विचार मैक्समूलर से कुछ भिन्न थे और उन्होंने वेदों को मैक्समूलर द्वारा दिए गए काल से थोड़ा प्राचीन माना।

जैकोबी (Hermann Jacobi):

- **नक्षत्र विद्या पर आधारित काल निर्धारण:** जर्मन भारतविद् हरमन जैकोबी ने वेदों के

काल निर्धारण के लिए नक्षत्र विद्या (खगोल विज्ञान) का उपयोग किया । उन्होंने ऋग्वेद में उल्लिखित कुछ नक्षत्रों की स्थिति का अध्ययन किया, विशेष रूप से कृत्तिका (प्लीएड्स) नक्षत्र की स्थिति का।

- **ध्रुव तारे के आधार पर गणना:** उन्होंने प्राचीन ध्रुव तारे (ध्रुव तारे की स्थिति समय के साथ बदलती है) के आधार पर भी गणना की।
- **उनके निष्कर्ष:** जैकोबी के निष्कर्षों के अनुसार, ऋग्वेद का काल लगभग 4500 ईसा पूर्व के आसपास होना चाहिए ।

• बालगंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak):

- **'ओरायन' और 'आर्कटिक होम इन द वेदाज':** भारतीय विद्वान और राष्ट्रवादी बालगंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तकों 'ओरायन' और 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' में वेदों के काल निर्धारण पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया ।
- **ज्योतिषीय और भौगोलिक साक्ष्य:** 'ओरायन' में उन्होंने ऋग्वेद में वर्णित कुछ ज्योतिषीय घटनाओं (जैसे वसंत संपात का मृगशिरा नक्षत्र में होना) का विश्लेषण किया। 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' में उन्होंने भौगोलिक साक्ष्यों (जैसे लंबे दिन और लंबी रातों का वर्णन) के आधार पर वेदों के रचना स्थल और काल का अनुमान लगाया।
- **उनके निष्कर्ष:** इन साक्ष्यों के आधार पर तिलक ने वेदों का काल लगभग 6000 ईसा पूर्व के आसपास निर्धारित किया, जो अन्य पश्चिमी विद्वानों द्वारा सुझाए गए काल से काफी प्राचीन है।

• एम. विन्टरनिट्ज़ (M. Winternitz):

- **तुलनात्मक अध्ययन और विकासवादी दृष्टिकोण:** ऑस्ट्रियाई भारतविद् मॉरिस

विन्टरनिट्ज़ ने वैदिक साहित्य का गहन तुलनात्मक अध्ययन किया और विकासवादी दृष्टिकोण से वेदों के काल निर्धारण का प्रयास किया ।

- **विन्टरनिट्ज़ का काल निर्धारण:** उनके निष्कर्ष मैक्समूलर और जैकोबी के विचारों के बीच थे, और उन्होंने वैदिक साहित्य के लिए एक लंबी अवधि का सुझाव दिया।

भारतीय परम्परागत विचार:

- **वेद को अनादि मानना:** भारतीय परम्परा में वेदों को अनादि और नित्य माना जाता है, जिसका अर्थ है कि उनका कोई आदि (प्रारम्भ) नहीं है और वे शाश्वत हैं । यह मानना है कि वेदों का ज्ञान किसी विशेष समय में उत्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही विद्यमान है ।
- **सृष्टि के प्रारम्भ से वेदों का अस्तित्व:** यह विश्वास है कि वेदों का ज्ञान ईश्वर द्वारा ऋषियों को ध्यान और तपस्या के माध्यम से प्रदान किया गया, और वेदों के मंत्र सृष्टि के साथ ही उत्पन्न हुए ।
- **कलियुग के प्रारम्भ से संबंध:** कुछ परम्पराएँ वेदों की उत्पत्ति को कलियुग के प्रारम्भ से भी जोड़ती हैं, जबकि अन्य उन्हें सृष्टि के प्रत्येक चक्र में प्रकट होने वाला मानती हैं ।
- **श्रावण मास में वेदों के उत्पत्ति की अवधारणा:** ऐसी भी अवधारणा है कि वेदों की उत्पत्ति श्रावण मास में हुई थी, जिसे वेद पर्व या उपाकर्म के रूप में मनाया जाता है । यह विचार मुख्यतः धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, न कि ऐतिहासिक गणनाओं पर।

विद्वान	काल निर्धारण	प्रमाण का आधार	मुख्य बिंदु
मैक्समूलर	1200-600 ईसा पूर्व	भाषाई और साहित्यिक विकास	"सूत्र, ब्राह्मण, मंत्र काल विभाजन"
ए. वेबर	अज्ञात	ज्योतिषीय	ज्योतिषीय प्रमाणों पर आधारित विचार
जैकोबी	4500 ईसा पूर्व	ज्योतिषीय (नक्षत्र)	ध्रुव तारे के आधार पर गणना
बालगंगाधर तिलक	6000 ईसा पूर्व	ज्योतिषीय और भौगोलिक	'ओरायन', 'आर्कटिक होम इन द वेदाज'
एम. विन्टरनिट्ज़	अज्ञात	तुलनात्मक और विकासवादी	तुलनात्मक अध्ययन और विकासवादी दृष्टिकोण
भारतीय परम्परा	अनादि	धार्मिक विश्वास	सृष्टि के प्रारम्भ से वेदों का अस्तित्व

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

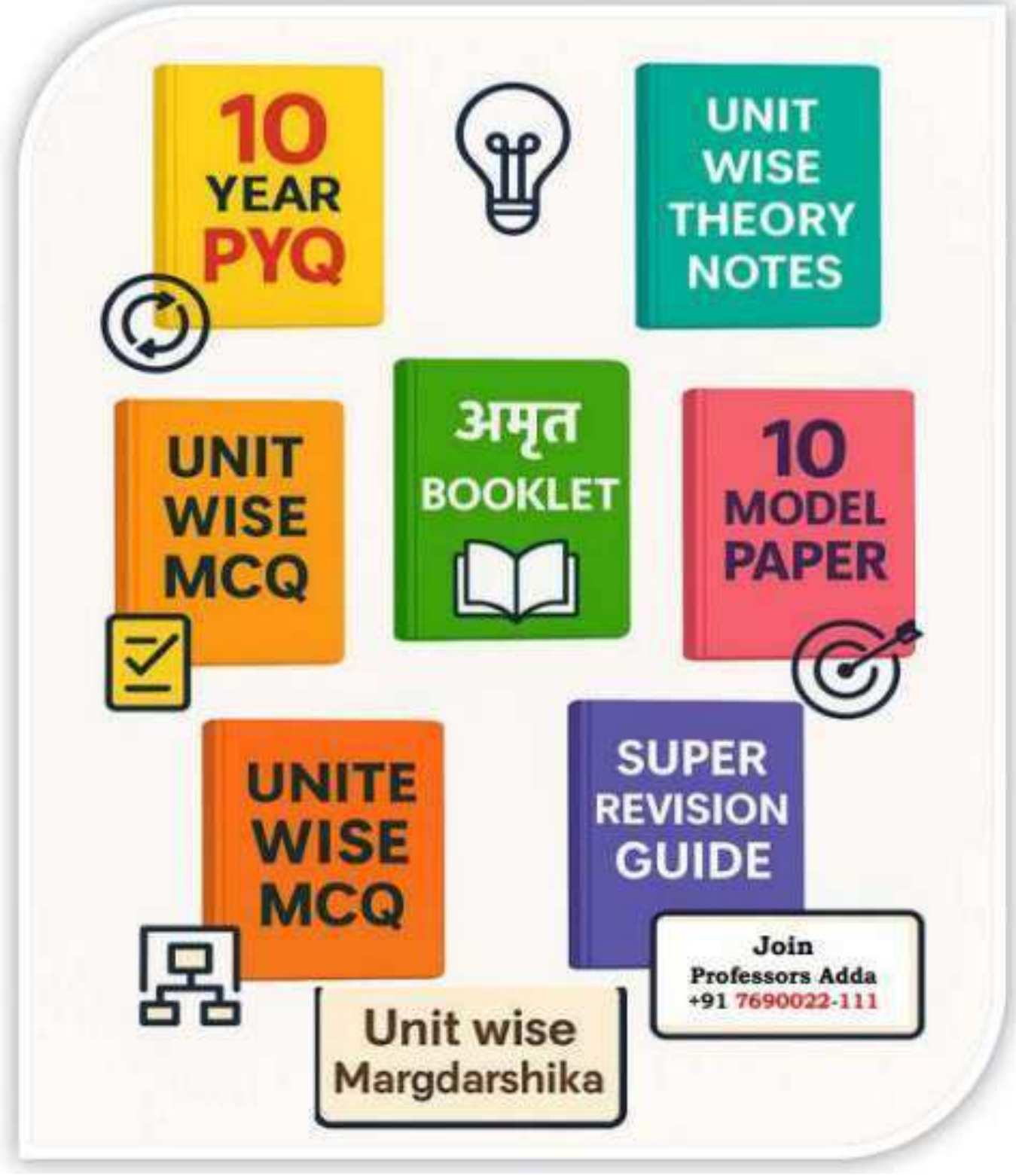

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

संहिता साहित्य

संहिताएँ वेदों का वह भाग हैं जिनमें मूल मंत्रों, प्रार्थनाओं और स्तुतियों का संग्रह है । 'संहिता' शब्द का अर्थ 'संग्रह' या 'संकलन' है । ये मंत्र विभिन्न देवताओं की स्तुति, यज्ञों में प्रयोग, या विभिन्न प्रयोजनों के लिए होते हैं। वैदिक साहित्य में चार प्रमुख संहिताएँ हैं, जो अपने विषय वस्तु और शैली में अद्वितीय हैं: ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता, और अथर्ववेद संहिता ।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

ऋग्वेद संहिता:

- **परिचय:** ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद माना जाता है । इसे 'स्तुति वेद' या 'ज्ञान का वेद' भी कहते हैं, क्योंकि इसमें मुख्यतः देवताओं की स्तुति में रचे गए मंत्र और सूक्त हैं । यह मानव सभ्यता के प्राचीनतम साहित्यिक अभिलेखों में से एक है।
- **शाखाएँ:** ऋग्वेद की कई शाखाएँ थीं, जिनमें से शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और माण्डूकायन प्रमुख हैं । वर्तमान में शाकल शाखा ही पूर्ण रूप से उपलब्ध है और अधिकांश ऋग्वेद अध्ययन इसी पर आधारित है।
- **विभाजन:**
  - **मण्डल विभाजन:** ऋग्वेद को 10 मण्डलों में विभाजित किया गया है । प्रत्येक मण्डल के अपने ऋषि (रचयिता) हैं, जैसे द्वितीय से सप्तम मण्डल 'परिवार मण्डल' कहलाते हैं क्योंकि वे विशिष्ट ऋषि परिवारों (जैसे गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वसिष्ठ) से संबंधित हैं । प्रथम और दशम मण्डल बाद के जोड़े गए माने जाते हैं और उनमें अनेक ऋषियों के सूक्त हैं।
  - **अष्टक विभाजन:** ऋग्वेद को 8 अष्टकों में भी विभाजित किया गया है । प्रत्येक अष्टक में अध्याय, वर्ग और ऋचाएँ होती हैं । यह विभाजन पाठ को व्यवस्थित करने का एक और तरीका है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **सूक्तों की संख्या:** ऋग्वेद में कुल 1028 सूक्त हैं, जिनमें 11 वालखिल्य सूक्त (जो आठवें मण्डल में हैं) भी शामिल हैं ।
- **ऋचाओं की संख्या:** ऋग्वेद में लगभग 10,500 ऋचाएँ (मंत्र या श्लोक) हैं ।
- **प्रमुख सूक्त:** ऋग्वेद में अनेक महत्त्वपूर्ण सूक्त हैं जो धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक महत्त्व रखते हैं:
  - **पुरुष सूक्त (दशम मण्डल):** यह सृष्टि की उत्पत्ति का दार्शनिक वर्णन करता है, जिसमें विराट पुरुष से चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की उत्पत्ति का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है ।
  - **हिरण्यगर्भ सूक्त (दशम मण्डल):** यह सृष्टि के आदि कारण और परमेश्वर की स्तुति करता है, जिसे हिरण्यगर्भ (स्वर्णमय गर्भ) कहा गया है ।
  - **नासदीय सूक्त (दशम मण्डल):** यह सृष्टि की उत्पत्ति संबंधी सबसे गहन दार्शनिक सूक्त है, जो सृष्टि से पहले की स्थिति का वर्णन करता है और पूछता है कि कौन जानता है कि सृष्टि कैसे हुई ।
  - **वाक् सूक्त (दशम मण्डल):** यह वाणी की महिमा और उसके दिव्य स्वरूप का वर्णन करता है ।
  - **संज्ञान सूक्त (दशम मण्डल):** यह एकता, सद्भाव और सामूहिक कार्य का आह्वान करता है ।
  - **विवाह सूक्त (दशम मण्डल):** यह विवाह संस्कार से संबंधित मंत्रों और अनुष्ठानों का वर्णन करता है ।
  - **अग्नि सूक्त (प्रथम मण्डल, प्रथम सूक्त):** यह ऋग्वेद का पहला सूक्त है और अग्नि देव की स्तुति करता है, जो देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ माने जाते हैं ।
  - **इन्द्र सूक्त, सूर्य सूक्त, उषा सूक्त, मरुत् सूक्त:** ये विभिन्न देवताओं (इंद्र, सूर्य, उषा, मरुत्) की स्तुति करते हैं और उनके गुणों तथा कार्यों का वर्णन करते हैं ।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **ऋग्वेद का महत्त्व:** ऋग्वेद धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । यह प्राचीन भारतीय इतिहास, धर्म, संस्कृति और आर्यों के जीवन को समझने का एक प्राथमिक और अनमोल स्रोत है। यह विश्व के सबसे पुराने धार्मिक ग्रंथों में से एक है।

तालिका 2: संहिता साहित्य का परिचय

वेद	प्रमुख विशेषताएँ	शाखाएँ (सामान्य)
ऋग्वेद	सबसे प्राचीन, स्तुतिपरक मंत्रों का संग्रह।	शाकल, बाष्कल
यजुर्वेद	यज्ञों में प्रयुक्त मंत्रों का संग्रह।	**शुक्ल यजुर्वेद:** वाजसनेयी (माध्यंदिन, काण्व) **कृष्ण यजुर्वेद:** तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल
सामवेद	यज्ञों में उद्गाता द्वारा गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह।	कौथुम, राणायणी, जैमिनी
अथर्ववेद	लौकिक विषयों, जादू-टोना, औषधि आदि का संग्रह।	शौनक, पैप्पलाद

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect – Sanskrit

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

संस्कृत इकाई-2 E-Booklet SAMPLE

4. वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति:

क. ऋक्प्रातिशाख्य: निम्नलिखित परिभाषाएँ

ऋक्प्रातिशाख्य, जो ऋग्वेद की शाकल शाखा से संबंधित है , वैदिक ध्वनिविज्ञान (शिक्षा) और व्याकरण का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। यह वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण और पाठ के नियमों का विस्तृत वर्णन करता है। यह वैदिक पाठ की विकृति (परिवर्तन) से रक्षा करता है।

1. **समानाक्षर (सरल स्वर):** वे स्वर जो स्वयं ही पूर्ण होते हैं और जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य स्वर की आवश्यकता नहीं होती। इन्हें 'ह्रस्व' और 'दीर्घ' भेद से दो प्रकार का माना जाता है।
   - उदाहरण: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ (कुल 10, जिनमें से ऌ और ॡ केवल ऋक्प्रातिशाख्य में स्वीकार्य हैं)।

2. **सन्ध्यक्षर (संयुक्त स्वर):** वे स्वर जो दो मूल स्वरों के मेल से बनते हैं। इन्हें 'संधि-स्वर' भी कहते हैं।
   - उदाहरण: ए (अ + इ), ऐ (अ + ए), ओ (अ + उ), औ (अ + ओ) (कुल 4)।
3. **अघोष:** वे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता। ये वायु के केवल घर्षण से उच्चारित होते हैं।
   - उदाहरण: वर्ग के पहले और दूसरे वर्ण (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ) तथा श, ष, स।
4. **सोष्म (सघोष):** वे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन होता है। इन्हें 'घोष वर्ण' भी कहते हैं। 'सोष्म' शब्द का एक अर्थ 'ऊष्म वर्णों सहित' भी होता है (श, ष, स, ह)। ऋक्प्रातिशाख्य में सघोष का अर्थ वर्ग के तीसरे, चौथे और पांचवें वर्णों से है।
   - उदाहरण: वर्ग के तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) तथा य, र, ल, व, ह।
5. **स्वरभक्ति:** दो व्यंजनों के बीच आने वाला एक सूक्ष्म स्वर -वर्ण (अ, इ, उ) जो उच्चारण की सहजता के लिए उत्पन्न होता है। यह विशेष रूप से 'र' या 'ल' व्यंजन के साथ होता है जब वे अन्य व्यंजनों के साथ जुड़ते हैं।
   - उदाहरण: 'इन्द्र' को कभी-कभी 'इन्दर' या 'चक्र' को 'चकर' के रूप में उच्चारण करने पर 'अ' की स्वरभक्ति मानी जाती है। इसका प्रयोग उच्चारण को आसान बनाने के लिए किया जाता है।
6. **यम:** ये चार प्रकार के विशेष नासिक्य वर्ण हैं जो स्पर्श व्यंजनों के बाद आते हैं (जैसे क-वर्ग के बाद 'ङ्')। इनका उच्चारण नासिका से होता है।
   - उदाहरण: क्य, ख्य, ग्य, घ्य (ये वर्ग के प्रथम चार वर्णों के बाद आने वाले विशेष अनुनासिक हैं)।
7. **रक्त:** वे वर्ण जिनके उच्चारण में नासिका से ध्वनि निकलती है , अर्थात् अनुनासिक वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्)। यम भी रक्त वर्ण होते हैं।

8. **संयोग:** दो या दो से अधिक व्यंजनों का बिना किसी स्वर के व्यवधान के साथ आना। यह अक्षर-सीमा के भीतर होता है।
   - उदाहरण: 'अग्नि' में 'ग्न' संयोग है; 'इन्द्र' में 'न्द्र' संयोग है।

9. **प्रगृह्य:** वे शब्द रूप (मुख्यतः द्विवचन) जिनके अंत में 'ई', 'ऊ', 'ए' आता है और जिनके बाद कोई स्वर आने पर भी सन्धि नहीं होती। ये 'प्रगृह्य' कहलाते हैं और अपने मूल रूप में बने रहते हैं।
   - उदाहरण: 'हरी इमौ' (हरी + इमौ), 'शम्भू इमौ' (शम्भू + इमौ), 'गङ्गे अमू' (गङ्गे + अमू)। 'अमी' (यह), 'एते' (ये), 'अहो' (ओहो) आदि भी प्रगृह्य होते हैं।

10. **रिफित (र-कारक):** 'रिफित' का अर्थ है 'र' ध्वनि से युक्त या 'र' का उच्चारण। ऋक्प्रातिशाख्य में र-कार (र) के उच्चारण और उसके बाद होने वाले परिवर्तनों से संबंधित कई नियम हैं। 'रिफित' विशेष रूप से उन स्थानों को संदर्भित करता है जहाँ 'र' का उच्चारण किया जाता है, जबकि अन्य स्थानों पर (जैसे पद के अंत में या व्यंजन के पहले) इसका लोप हो सकता है या यह विसर्ग में बदल सकता है।

ख. निरुक्त (अध्याय 1 तथा 2)

निरुक्त वेदों का व्युत्पत्तिशास्त्र है। यह यास्क द्वारा रचित है और वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति (निर्वचन) और अर्थ निर्धारण का विज्ञान है। यास्क ने वैदिक शब्दों को समझने के लिए व्युत्पत्ति को आधार माना है।

1. चार पद नाम विचार (चत्वारि पदजातानि):

यास्क ने शब्दों को उनकी प्रकृति और कार्य के आधार पर चार श्रेणियों (पदजातों) में विभाजित किया है। यह पाणिनी के आठ पदजातों (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि) से भिन्न है।

उपसर्गों के विभिन्न अर्थों का वर्णन किया है।

- उदाहरण: 'हरति' (ले जाता है) क्रिया में विभिन्न उपसर्गों का प्रयोग:
- 'प्रहरति' (प्रहार करता है)
- 'विहरति' (घूमता है, क्रीड़ा करता है)
- 'आहरति' (लाता है)
- 'संहरति' (संहार करता है, नष्ट करता है)
- 'परिहरति' (छोड़ता है, त्यागता है)

4. निपात की कोटियाँ:

यास्क ने निपातों को उनके कार्य के आधार पर तीन मुख्य कोटियों में विभाजित किया है:

- उपमार्थक निपात: वे निपात जो तुलना या सादृश्य बताने के लिए प्रयुक्त होते हैं।
- उदाहरण: 'इव' (के समान), 'न' (के समान)।
- कर्मोपसंग्रहार्थक निपात: वे निपात जो वाक्य में जोड़ने, समुच्चय (जोड़) या विकल्प का अर्थ बताते हैं।
- उदाहरण: 'च' (और), 'वा' (या), 'अथ' (इसके बाद)।
- पदपूरणार्थक निपात: वे निपात जिनका अपना कोई विशेष अर्थ नहीं होता , बल्कि वे केवल वाक्य में पद भरने या उच्चारण की सुंदरता के लिए प्रयुक्त होते हैं। यास्क ने ऐसे निपातों को स्वीकार किया है, लेकिन उन पर अधिक जोर नहीं दिया है।
- उदाहरण: 'इत्', 'नु', 'स्वित्'।

5. निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन

निरुक्त के अध्ययन के मुख्य प्रयोजन (प्रयोजनानि) हैं:

- अर्थावबोध: वैदिक मंत्रों के सही अर्थ को समझना।

- ज्ञान की शुद्धता: शब्दों के सही अर्थ को जानकर ज्ञान को शुद्ध करना।
- संशय निवारण: शब्दों के अनेक अर्थों में उत्पन्न होने वाले संदेहों को दूर करना।
- यज्ञों का सही निष्पादन: मंत्रों के अर्थ को जानने से यज्ञों का सही निष्पादन संभव होता है।
- भाष्य निर्माण: वैदिक टीकाओं और भाष्य को लिखने की योग्यता प्राप्त करना।

6. निर्वचन के सिद्धान्त:

निर्वचन (शब्दों की व्युत्पत्ति) के लिए यास्क ने कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं:

- अर्थानुगम (अर्थ की प्रधानता): किसी भी शब्द की व्युत्पत्ति उसके अर्थ के अनुरूप होनी चाहिए। अर्थ ही व्युत्पत्ति का आधार है।
- धातुजत्व (क्रिया से उत्पत्ति): सभी नाम आख्यात (क्रिया) से उत्पन्न होते हैं। यदि कोई शब्द किसी धातु से सीधे व्युत्पन्न नहीं होता , तो उसे 'निरुढ़' माना जाता है, लेकिन मूल रूप से सभी धातुज हैं।
- वर्णलोप, आगम, विपर्यय: व्युत्पत्ति करते समय वर्णों का लोप , आगम (जुड़ना) या विपर्यय (उलट-पुलट) हो सकता है ताकि धातु से अर्थ संगत हो सके।
- प्रसिद्ध अर्थ की प्रधानता : यदि किसी शब्द का एक प्रसिद्ध और लोक -प्रचलित अर्थ है, तो व्युत्पत्ति को उसके अनुसार ही करना चाहिए।
- एकपदैकवाक्यता: एक शब्द की व्युत्पत्ति उस वाक्य के संदर्भ में होनी चाहिए जिसमें वह प्रयुक्त हुआ है।
- अनेकार्थता: एक ही शब्द के विभिन्न संदर्भों में अनेक अर्थ हो सकते हैं , और निर्वचन उन सभी अर्थों को ध्यान में रखना चाहिए।

7. निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year

- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend

- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

- **अन्ध (अंध):** 'अ' (नहीं) + 'धा' (धारण करना) धातु से। जो प्रकाश को धारण नहीं करता, अर्थात् अंधकार। (कुछ व्युत्पत्तियाँ 'अन्ध्' धातु से भी मानती हैं, जिसका अर्थ है 'अंधेरा करना')।
- **अग्नि (अग्नि):** 'अग्र' (आगे) + 'नी' (ले जाना) धातु से। जो आगे -आगे चलता है (क्योंकि अग्नि को यज्ञों में आगे रखा जाता था)। या 'अच्' (पूजा करना) + 'नि' प्रत्यय से। या 'अंगति' (आगे बढ़ता है) इति अग्निः।
- **जातवेदस्:** 'जातम्' (उत्पन्न हुए) 'वेदः' (ज्ञान) यस्य सः (जिसका ज्ञान उत्पन्न हो चुका है, अर्थात् सर्वज्ञ)। यह अग्नि का एक विशेषण है , जिसे सभी उत्पन्न हुए प्राणियों का ज्ञान है। या 'जातप्रज्ञानः' (जिसे सब कुछ उत्पन्न होते ही ज्ञात हो जाता है)।
- **वैश्वानर:** 'विश्व' (सभी) + 'नर' (मनुष्य)। सभी मनुष्यों में समान रूप से विद्यमान, या सभी लोगों को धारण करने वाला। यह अग्नि का एक विशेषण है जो सार्वभौमिक अग्नि को दर्शाता है।
- **निघण्टु:** 'नि' + 'घं' (इकट्ठा करना) + 'टुन्' (प्रत्यय)। शब्दों का संग्रह या सूची। यास्क के समय तक वैदिक शब्दों के जो संग्रह उपलब्ध थे, वे 'निघण्टु' कहलाते थे। यास्क का निरुक्त मुख्यतः इन्हीं निघण्टुओं पर आधारित है।

ग. निरुक्त (अध्याय 7 दैवत काण्ड)

निरुक्त का सातवाँ अध्याय 'दैवत काण्ड' कहलाता है। इसमें वैदिक देवताओं का विवेचन , उनके नामों की व्युत्पत्ति , और उनके स्थान (लोक) के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। यास्क ने देवताओं को तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया है , यह सिद्धांत 'त्रैलोक्य' (तीन लोक) की अवधारणा पर आधारित है।

- **तीन प्रकार के देवता:**
  1. **पृथ्वीस्थानीय देवता (पृथिवीलोक के):** ये वे देवता हैं जो पृथ्वी पर या पृथ्वी से संबंधित स्थानों पर निवास करते हैं।

- प्रमुख देवता: अग्नि (पृथ्वी पर स्थित), पृथ्वी (स्वयं देवी), सोम (वनस्पति और औषधियों के देवता), बृहस्पति (पुरोहित और प्रार्थना के देवता)।
- कार्य: यज्ञीय अग्नि, अन्न, जल, वनस्पति, और भौतिक पोषण प्रदान करना।

2. **अंतरिक्षस्थानीय देवता (अंतरिक्षलोक के):** ये वे देवता हैं जो वायुमंडल और अंतरिक्ष में निवास करते हैं।

- प्रमुख देवता: इन्द्र (वर्षा, तूफान, युद्ध के देवता), वायु (वायु देवता), रुद्र (तूफान, चिकित्सा, संहार के देवता), मरुत् (तूफान के दे वता, रुद्र के सहायक), पर्जन्य (मेघ और वर्षा के देवता)।
- कार्य: वर्षा लाना, तूफान पैदा करना , वायु प्रवाहित करना , और अंतरिक्षीय घटनाओं को नियंत्रित करना।

3. **द्युस्थानीय देवता (द्युलोक/स्वर्गलोक के):** ये वे देवता हैं जो स्वर्ग या द्युलोक में निवास करते हैं और प्रकाश से संबंधित हैं।

- प्रमुख देवता: सूर्य (प्रकाश, जीवन, ऊर्जा के देवता), द्यौ (आकाश के देवता), उषा (प्रभात की देवी), सविता (प्रेरणा देने वाला सूर्य), विष्णु (सर्वव्यापी देवता), वरुण (ऋत के संरक्षक, नैतिक व्यवस्था के देवता)।
- कार्य: प्रकाश प्रदान करना, दिन-रात का चक्र चलाना, नैतिक व्यवस्था बनाए रखना, और दिव्य प्रेरणा देना।

- **एक देवता की बहुलता (एकम सद् विप्रा बहुधा वदन्ति):** यास्क ने यह भी माना है कि सभी देवता एक ही महान् आत्मा (परमात्मा या ब्रह्म) के विभिन्न रूप या अभिव्यक्तियाँ हैं। यह सिद्धांत ऋग्वेद के प्रसिद्ध कथन 'एकम सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (एक ही सत् है, ज्ञानी उसे अनेक रूपों में कहते हैं) का समर्थन करता है। इसका अर्थ है कि एक ही परम सत्ता विभिन्न नामों और रूपों में पूजित होती है।

विषय	वैदिक व्याकरण	निरुक्त	वैदिक व्याख्या पद्धति
मुख्य फोकस	वैदिक भाषा की संरचना, पदों की व्युत्पत्ति, प्रकृति-प्रत्यय विभाग, स्वर एवं उच्चारण की शुद्धता।	वैदिक शब्दों (विशेषतः कठिन एवं अप्रचलित) का व्युत्पत्तिपरक अर्थ-निर्णय, पदों का संग्रह एवं वर्गीकरण।	वेद मंत्रों के विभिन्न दृष्टिकोणों से अर्थ एवं तात्पर्य का निर्धारण, मंत्रों का यज्ञपरक, देवपरक, अध्यात्मपरक एवं ऐतिहासिक संदर्भों में विनियोग।
प्रमुख उद्देश्य	वेद मंत्रों के शुद्ध स्वरूप की रक्षा करना, पदों के यथार्थ रूप को समझना, अर्थ-निर्धारण में व्याकरणिक आधार प्रदान करना।	वेद के दुर्गम शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करना, मंत्रों के वास्तविक अभिप्राय तक पहुँचने में सहायता करना, शब्दों की ऐतिहासिक एवं धात्वर्थ मीमांसा करना।	वेद के समग्र संदेश को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में समझना, दार्शनिक, कर्मकांडीय, आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों का उद्घाटन करना, समयानुकूल वेदार्थ प्रस्तुत करना।
मुख्य ग्रंथ/प्रवर्तक	प्रातिशाख्य सूत्र (शौनक, कात्यायन आदि), पाणिनि की अष्टाध्यायी (यद्यपि मुख्य रूप से लौकिक संस्कृत पर केंद्रित, वैदिक प्रक्रियाएं भी समाहित), विभिन्न शिक्षा-ग्रंथ।	यास्काचार्य कृत 'निरुक्त' (जो निघण्टु नामक वैदिक शब्द-संग्रह की व्याख्या है)। यास्क से पूर्व भी निरुक्तकार हुए, जैसे शाकटायन, औदुम्बरायण आदि।	**विभिन्न पद्धतियाँ एवं संबंधितग्रंथ/विचारक: याज्ञिक पद्धति (कर्मकांडपरक):** ब्राह्मण ग्रंथ (ऐतरेय, शतपथ आदि), जैमिनि कृत मीमांसा सूत्र। **नैरुक्तिक पद्धति (व्युत्पत्तिपरक):** यास्क का निरुक्त। **ऐतिहासिक पद्धति:** वेद में वर्णित घटनाओं एवं पात्रों को ऐतिहासिक दृष्टि से देखना। **आध्यात्मिक/दार्शनिक पद्धति:** उपनिषद्, बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र, विभिन्न वेदांत सम्प्रदाय (अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत आदि)। **देवतापरक पद्धति:** विभिन्न देवताओं के स्वरूप, कार्य एवं मंत्रों में उनकी स्तुति का विवेचन। आधुनिक व्याख्याकार (जैसे - स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्री अरविन्द) भी अपनी विशिष्ट पद्धतियों के लिए जाने जाते हैं।
पद्धति	पदों का विश्लेषण, संधि-नियम, स्वर-प्रक्रिया, धातु-प्रत्यय का विचार, शब्द-रूप	शब्दों का धातुज अर्थ निकालना, अनेक अर्थ वाले शब्दों का	संदर्भानुसार अर्थ (Contextual Meaning), तर्क, अनुमान, शब्द-प्रमाण (विशेषतः मीमांसा में), परंपरा, तुलनात्मक

	एवं धातु-रूप का निर्धारण।	प्रसंगानुसार अर्थ-निर्धारण, पर्यायवाची शब्दों का विवेचन, ऐतिहासिक एवं पौराणिक संदर्भों का उपयोग।	अध्ययन एवं अन्तःप्रज्ञा का प्रयोग।
वेदार्थ में योगदान	मंत्रों की शुद्धता एवं उनके व्याकरणिक स्वरूप को सुनिश्चित कर अर्थ की पहली सीढ़ी प्रदान करता है। यह पद-ज्ञान का आधार है।	विशिष्ट एवं क्लिष्ट वैदिक शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर मंत्र के गूढ़ भाव तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह पदार्थ-ज्ञान (शब्दार्थ) में सहायक है।	मंत्र या संपूर्ण वेद के तात्पर्य, दर्शन एवं व्यावहारिक उपयोगिता को विभिन्न आयामों से प्रकट करती है। यह वाक्यार्थ एवं तात्पर्यार्थ का निर्धारण करती है।
परस्पर सम्बन्ध	निरुक्त, वैदिक व्याकरण पर आधारित है क्योंकि शब्दों की व्युत्पत्ति के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। वैदिक व्याख्या पद्धतियाँ, व्याकरण और निरुक्त दोनों के सिद्धांतों का उपयोग करती हैं। व्याकरण पद-शुद्धि, निरुक्त पद-अर्थ और व्याख्या पद्धतियाँ वाक्यार्थ एवं तात्पर्य का बोध कराती हैं।	वैदिक व्याकरण के नियमों के आधार पर ही निरुक्तकार शब्दों की व्युत्पत्ति करते हैं। निरुक्त स्वयं एक विशिष्ट व्याख्या पद्धति (नैरुक्तिक) का आधार है।	सम्यक् वैदिक व्याख्या के लिए शुद्ध व्याकरणिक ज्ञान एवं शब्दों के नैरुक्तिक अर्थ का ज्ञान अपरिहार्य है। विभिन्न व्याख्या पद्धतियाँ इन दोनों को आधार बनाकर ही अग्रसर होती हैं।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect Sanskrit

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गई
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

यूजीसी नेट संस्कृत - इकाई-I: Mcqs Sample

1. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (वेद) का सूची II (संबद्ध ब्राह्मण ग्रंथ) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (वेद)	सूची II (संबद्ध ब्राह्मण ग्रंथ)
A. ऋग्वेद	I. शतपथ ब्राह्मण
B. यजुर्वेद (शुक्ल)	II. गोपथ ब्राह्मण
C. सामवेद	III. ऐतरेय ब्राह्मण
D. अथर्ववेद	IV. ताण्ड्य महाब्राह्मण (पंचविंश)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-III, B-I, C-IV, D-II

(2) A-I, B-II, C-III, D-IV

(3) A-III, B-IV, C-I, D-II

(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

सही उत्तर: (1) A-III, B-I, C-IV, D-II

स्पष्टीकरण:

- **ऋग्वेद (A-III):**
  - ऋग्वेद से संबद्ध प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ **ऐतरेय ब्राह्मण** और कौषीतकि (या शांखायन) ब्राह्मण हैं।
  - ऐतरेय ब्राह्मण में सोमयज्ञ तथा राजसूय यज्ञ का विस्तृत वर्णन मिलता है।
  - इसमें शौनक और आश्वलायन की गुरु-शिष्य परम्परा का भी उल्लेख है।
- **यजुर्वेद (शुक्ल) (B-I):**
  - शुक्ल यजुर्वेद का एकमात्र उपलब्ध ब्राह्मण ग्रंथ **शतपथ ब्राह्मण** है।
  - यह सभी ब्राह्मण ग्रंथों में सबसे विशाल और महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसमें 100 अध्याय हैं।
  - इसमें यज्ञों की विस्तृत व्याख्या के साथ-साथ दार्शनिक एवं आख्यानात्मक सामग्री भी प्रचुर मात्रा में है।
- **सामवेद (C-IV):**
  - सामवेद से संबद्ध प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथों में **ताण्ड्य महाब्राह्मण (पंचविंश ब्राह्मण)**, षड्विंश ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण आदि हैं।
  - ताण्ड्य महाब्राह्मण में विभिन्न प्रकार के सोमयागों तथा व्रात्यस्तोम यज्ञ का वर्णन है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **अथर्ववेद (D-II):**
  - अथर्ववेद का एकमात्र उपलब्ध ब्राह्मण ग्रंथ **गोपथ ब्राह्मण** है।
  - यह अन्य ब्राह्मण ग्रंथों की तुलना में अर्वाचीन माना जाता है।
  - इसमें अथर्ववेदीय यज्ञ-पद्धति तथा ब्रह्मत्व का विवेचन है।

2. अभिकथन और तर्क (A and R) प्रकार

अभिकथन (A): ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ माना जाता है।

तर्क (R): ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं की स्तुतियाँ संगृहीत हैं जो तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक चिंतन को दर्शाती हैं।

कूट:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य है।

(4) (A) असत्य है परन्तु (R) सत्य है।

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** ऋग्वेद को सामान्यतः विश्व के प्राचीनतम लिखित ग्रंथों में से एक माना जाता है, विशेषकर भारतीय-आर्य भाषा परिवार में। इसका रचनाकाल लगभग 1500-1200 ईसा पूर्व के मध्य माना जाता है।
- **तर्क (R) - सत्य:** ऋग्वेद में मुख्यतः विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों (जैसे अग्नि, इंद्र, वरुण, सूर्य) को देवता रूप में मानकर उनकी स्तुतियाँ की गई हैं। ये स्तुतियाँ तत्कालीन आर्यों के धार्मिक विश्वासों, सामाजिक संरचना, जीवन शैली और उनके दार्शनिक विचारों का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- **संबंध:** ऋग्वेद की प्राचीनता का एक प्रमुख प्रमाण उसमें निहित स्तुतियों की भाषा, शैली और विषय-वस्तु है, जो उस युग के जीवन और चिंतन को प्रतिबिंबित करती हैं। उसकी विषय-वस्तु (देवताओं की स्तुतियाँ और संबंधित चिंतन) ही उसे एक महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथ बनाती है और उसकी प्राचीनता को प्रमाणित करने में सहायक है।

3. कथन प्रकार (Statement Type)

उपनिषदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

कथन I: उपनिषदों को 'वेदान्त' भी कहा जाता है क्योंकि ये वेदों के अंतिम भाग हैं और वैदिक चिंतन के

चरम निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं।

कथन II: उपनिषदों का मुख्य विषय कर्मकाण्ड और यज्ञों की विस्तृत विवेचना है।

कथन III: 'तत्त्वमसि' और 'अहं ब्रह्मास्मि' जैसे महावाक्य उपनिषदों में पाए जाते हैं।

कथन IV: उपनिषदों की संख्या १०८ मानी जाती है, जिनमें ईश, केन, कठ प्रमुख हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल कथन I और II

(2) केवल कथन I, III और IV

(3) केवल कथन II और IV

(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (2) केवल कथन I, III और IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** उपनिषदों को 'वेदान्त' (वेद + अन्त) कहा जाता है क्योंकि वे वैदिक वाङ्मय के अंतिम भाग (ज्ञानकाण्ड) का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैदिक ज्ञान की पराकाष्ठा या अंतिम निष्कर्ष (ब्रह्मविद्या, आत्मविद्या) को प्रस्तुत करते हैं।
- **कथन III (सही):** "तत्त्वमसि" (वह तुम हो - छांदोग्य उपनिषद) और "अहं ब्रह्मास्मि" (मैं ब्रह्म हूँ - बृहदारण्यक उपनिषद) जैसे प्रसिद्ध महावाक्य उपनिषदों के अद्वैतवादी दर्शन के सार हैं, जो जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन करते हैं।
- **कथन IV (सही):** मुक्तिकोपनिषद में १०८ उपनिषदों का उल्लेख मिलता है, हालांकि इनमें से लगभग १०-१३ उपनिषदों को अधिक प्राचीन और प्रमुख माना जाता है, जिनमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक आदि शामिल हैं।
- **कथन II (गलत):** उपनिषदों का मुख्य विषय कर्मकाण्ड और यज्ञों की विस्तृत विवेचना नहीं, बल्कि आत्म-तत्व, ब्रह्म-तत्व, सृष्टि-रहस्य और मोक्ष मार्ग जैसे गहन दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विषयों का निरूपण है। कर्मकाण्ड का विस्तृत विवेचन ब्राह्मण ग्रंथों में मिलता है।

4. बहु-विकल्प प्रकार (Multi-Option Type)

वैदिक देवताओं को सामान्यतः किन तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है?

(A) पृथ्वीस्थानीय देवता

(B) अंतरिक्षस्थानीय (या मध्यमस्थानीय) देवता

(C) द्युस्थानीय देवता

(D) पातालस्थानीय देवता

(E) वनस्थानीय देवता

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल (A), (B), और (C)

(2) केवल (A), (C), और (D)

(3) केवल (B), (D), और (E)

(4) केवल (A), (D), और (E)

सही उत्तर: (1) केवल (A), (B), और (C)

स्पष्टीकरण:

- **पृथ्वीस्थानीय देवता (A):** वे देवता जिनका निवास या कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से पृथ्वी पर माना गया है।
  - उदाहरण: अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वती।
  - यास्क ने निरुक्त में इन श्रेणियों का उल्लेख किया है।
- **अंतरिक्षस्थानीय (या मध्यमस्थानीय) देवता (B):** वे देवता जिनका संबंध आकाश और पृथ्वी के मध्य, अर्थात् अंतरिक्ष या वायुमंडल से है।
  - उदाहरण: इंद्र, वायु, रुद्र, मरुत्, पर्जन्य।
- **द्युस्थानीय देवता (C):** वे देवता जिनका निवास स्वर्ग या आकाश के उच्चतम भाग में माना गया है।
  - उदाहरण: द्यौष्, वरुण, मित्र, सूर्य, सविता, पूषन्, विष्णु, उषा, आदित्यगण।
- **(D) और (E) अप्रासंगिक:** पातालस्थानीय और वनस्थानीय जैसी श्रेणियाँ वैदिक देवताओं के पारंपरिक त्रिविध वर्गीकरण का हिस्सा नहीं हैं, यद्यपि कुछ गौण देवता वनों या विशिष्ट स्थानों से संबंधित हो सकते हैं।

5. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (यज्ञ का प्रकार) का सूची II (मुख्य उद्देश्य/विशेषता) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (यज्ञ का प्रकार)	सूची II (मुख्य उद्देश्य/विशेषता)
A. अश्वमेध यज्ञ	I. पुत्र प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला यज्ञ।
B. राजसूय यज्ञ	II. राजा के चक्रवर्ती सम्राट बनने एवं साम्राज्य विस्तार हेतु।
C. वाजपेय यज्ञ	III. अन्न और शक्ति की प्राप्ति तथा अन्य राजाओं पर श्रेष्ठता।
D. पुत्रेष्टि यज्ञ	IV. राजा के राज्याभिषेक से संबंधित, उसकी सार्वभौमिक सत्ता का प्रतीक।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-II, B-IV, C-III, D-I

(2) A-IV, B-II, C-I, D-III
(3) A-II, B-III, C-IV, D-I
(4) A-I, B-IV, C-III, D-II

सही उत्तर: (1) A-II, B-IV, C-III, D-I

स्पष्टीकरण:

- **अश्वमेध यज्ञ (A-II):**
  - यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित श्रौत यज्ञ था, जो महान राजाओं द्वारा अपने साम्राज्य के विस्तार, सार्वभौम सत्ता की स्थापना और चक्रवर्ती सम्राट की पदवी प्राप्त करने के लिए किया जाता था।
  - इसमें एक विशेष अश्व को छोड़ा जाता था जो विभिन्न राज्यों में विचरण करता था।
- **राजसूय यज्ञ (B-IV):**
  - यह यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर उसकी संप्रभुता और महिमा को स्थापित करने के लिए किया जाता था।
  - यह राजा की सार्वभौमिक सत्ता का प्रतीक माना जाता था और इसमें विभिन्न प्रकार के अभिषेक और कृत्य शामिल होते थे। (शतपथ ब्राह्मण में विस्तृत वर्णन)
- **वाजपेय यज्ञ (C-III):**
  - 'वाज' का अर्थ अन्न या शक्ति है। यह यज्ञ अन्न, शक्ति, समृद्धि और अन्य राजाओं पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए किया जाता था।
  - इसमें रथ दौड़ का भी आयोजन होता था और यह राजा को सम्राट की उपाधि प्रदान करता था।
- **पुत्रेष्टि यज्ञ (D-I):**
  - यह यज्ञ विशेष रूप से पुत्र प्राप्ति की कामना से किया जाता था।
  - राजा दशरथ द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ किए जाने का उल्लेख रामायण में मिलता है।

6. अभिकथन और तर्क (A and R) प्रकार

अभिकथन (A): आरण्यक ग्रंथ वानप्रस्थ आश्रम में रहने वाले ऋषियों द्वारा वनों में रचे गए।
तर्क (R): आरण्यकों में यज्ञों के गूढ़ रहस्यों, दार्शनिक तत्वों और प्रतीकात्मक अर्थों का विवेचन किया गया है, जो कर्मकाण्ड से ज्ञानकाण्ड की ओर संक्रमण दर्शाते हैं।

कूट:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य है।
(4) (A) असत्य है परन्तु (R) सत्य है।

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** 'आरण्यक' शब्द 'अरण्य' (वन) से बना है। ये ग्रंथ पारंपरिक रूप से उन वानप्रस्थियों और सन्यासियों के लिए थे जो सांसारिक जीवन से दूर वनों में रहकर अध्ययन और चिंतन करते थे।
  - इनका पठन-पाठन और मनन प्रायः वनों के शांत वातावरण में होता था।
- **तर्क (R) - सत्य:** आरण्यक ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथों के कर्मकाण्ड और उपनिषदों के शुद्ध ज्ञान के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं।
  - इनमें यज्ञों के स्थूल रूप के स्थान पर उनके आध्यात्मिक, दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थों पर अधिक बल दिया गया है।
  - ये कर्मकाण्ड की जटिलताओं से हटकर चिंतन और मनन को प्रोत्साहित करते हैं, जो ज्ञानकाण्ड (उपनिषद) की पृष्ठभूमि तैयार करता है।
- **संबंध:** आरण्यकों की रचना का स्थान (वन) और उनकी विषय-वस्तु (यज्ञों के गूढ़ रहस्य और दार्शनिक चिंतन) परस्पर संबंधित हैं। वनों का एकांतमय परिवेश ऐसे गहन चिंतन के लिए उपयुक्त था, और यह चिंतन ही कर्मकाण्ड से ज्ञान की ओर एक महत्वपूर्ण संक्रमण था।

7. कथन प्रकार (Statement Type)

वेदांगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

कथन I: वेदांगों की संख्या छह है, जो वेदों के सम्यक् अध्ययन और विनियोग के लिए सहायक हैं।
कथन II: शिक्षा वेदांग का संबंध वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण से है।
कथन III: कल्प वेदांग में ज्योतिषीय गणनाओं और नक्षत्रों का विस्तृत वर्णन है।
कथन IV: निरुक्त को वेद पुरुष का कान कहा गया है और यह वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति बताता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) केवल कथन I, II और IV
(2) केवल कथन I और III
(3) केवल कथन II, III और IV
(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (1) केवल कथन I, II और IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** वेदांग छह हैं: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। ये वेदों के अर्थज्ञान, शुद्ध उच्चारण, यज्ञों में उनके सही प्रयोग आदि में सहायता करते हैं। इन्हें वेद पुरुष के विभिन्न अंगों के रूप में कल्पित किया गया है।
- **कथन II (सही):** शिक्षा वेदांग का मुख्य प्रयोजन वैदिक मंत्रों के वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, संतान आदि के शुद्ध उच्चारण की विधि बताना है। पाणिनि शिक्षा और विभिन्न प्रातिशाख्य ग्रंथ इसके उदाहरण हैं। इसे वेद पुरुष की नासिका (घ्राण) कहा गया है।
- **कथन IV (सही):** निरुक्त वेदांग वैदिक शब्दों (विशेषकर कठिन और अप्रचलित) की व्युत्पत्ति और अर्थ स्पष्ट करता है। यास्क का निरुक्त इस वेदांग का प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसे वेद पुरुष का श्रोत्र (कान) कहा गया है।
- **कथन III (गलत):** कल्प वेदांग में कर्मकाण्ड, यज्ञ-पद्धति, गृह्यसूत्र (पारिवारिक संस्कार) और धर्मसूत्र (सामाजिक नियम) का विधान है, न कि ज्योतिषीय गणनाओं का। ज्योतिषीय गणनाओं और नक्षत्रों का विस्तृत वर्णन **ज्योतिष वेदांग** में मिलता है (जैसे लगध का वेदांग ज्योतिष)। कल्प को वेद पुरुष का हाथ कहा गया है।

8. बहु-विकल्प प्रकार (Multi-Option Type)

ऋग्वेद के दस मण्डलों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से तथ्य सही हैं?

(A) द्वितीय से सप्तम मण्डल तक को 'वंश मण्डल' या 'पारिवारिक मण्डल' कहा जाता है।

(B) नवम मण्डल पूर्णतः सोम देवता को समर्पित है।

(C) प्रथम और दशम मण्डल अपेक्षाकृत अर्वाचीन माने जाते हैं।

(D) दशम मण्डल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है।

(E) अष्टम मण्डल कण्व ऋषि और उनके वंशजों से संबंधित है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल (A), (B), और (C)

(2) केवल (A), (B), (D), और (E)

(3) केवल (C), (D), और (E)

(4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

सही उत्तर: (4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

स्पष्टीकरण:

- **(A) सही:** ऋग्वेद के द्वितीय से लेकर सप्तम मण्डल तक के सूक्त मुख्य रूप से विशिष्ट ऋषि परिवारों (गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज, वसिष्ठ) द्वारा रचित माने जाते हैं, इसलिए इन्हें 'वंश मण्डल' या 'पारिवारिक मण्डल' (Family Books) कहा जाता है। ये मंडल ऋग्वेद के प्राचीनतम अंशों में से हैं।
- **(B) सही:** ऋग्वेद का नवम मण्डल पूरी तरह से सोम देवता को समर्पित है। इसमें सोम रस, उसके शोधन (पवमान) और यज्ञ में उसके महत्व से संबंधित सूक्त हैं।
- **(C) सही:** भाषा, शैली और विषय-वस्तु के आधार पर सामान्यतः माना जाता है
  - कि ऋग्वेद के प्रथम और दशम मण्डल बाद में जोड़े गए और ये अन्य मण्डलों की तुलना में अपेक्षाकृत अर्वाचीन हैं।
- **(D) सही:** ऋग्वेद के दशम मण्डल के प्रसिद्ध पुरुष सूक्त (१०.९०) में विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से चारों वर्णों (ब्राह्मण, राजन्य/क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की उत्पत्ति का प्रतीकात्मक वर्णन मिलता है, जो वर्ण व्यवस्था का प्राचीनतम साहित्यिक साक्ष्य है।
- **(E) सही:** ऋग्वेद का अष्टम मण्डल मुख्य रूप से कण्व ऋषि और उनके वंशजों तथा कुछ अन्य ऋषियों (जैसे आंगिरस) से संबंधित सूक्तों का संग्रह है।

9. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (वैदिक ऋषि/आचार्य) का सूची II (संबद्ध ग्रंथ/संकल्पना) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (वैदिक ऋषि/आचार्य)	सूची II (संबद्ध ग्रंथ/संकल्पना)
A. यास्क	I. अष्टाध्यायी
B. शौनक	II. निरुक्त
C. पाणिनि	III. बृहद्देवता, ऋक्प्रातिशाख्य
D. लगध	IV. वेदांग ज्योतिष

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-II, B-III, C-I, D-IV

(2) A-III, B-II, C-IV, D-I

(3) A-II, B-I, C-IV, D-III

(4) A-IV, B-III, C-I, D-II

सही उत्तर: (1) A-II, B-III, C-I, D-IV

स्पष्टीकरण:

- **यास्क (A-II):**

- महर्षि यास्क को **निरुक्त** नामक वेदांग के प्रणेता के रूप में जाना जाता है।
- निरुक्त वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और व्याख्या करने वाला महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो निघण्टु नामक वैदिक शब्दकोश पर आधारित है।

- **शौनक (B-III):**
  - आचार्य शौनक का संबंध कई वैदिक ग्रंथों से है, जिनमें **बृहद्देवता** (ऋग्वैदिक देवताओं का विश्वकोश) और **ऋक्प्रातिशाख्य** (ऋग्वेद की ध्वन्यात्मकता और उच्चारण पर ग्रंथ) प्रमुख हैं।
  - वे चरणव्यूह और अन्य अनुक्रमणी ग्रंथों के रचयिता भी माने जाते हैं।
- **पाणिनि (C-I):**
  - महर्षि पाणिनि संस्कृत व्याकरण के महानतम आचार्य हैं, जिनकी कृति **अष्टाध्यायी** संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप प्रदान करती है।
  - यद्यपि यह मुख्यतः लौकिक संस्कृत का व्याकरण है, तथापि इसमें वैदिक संस्कृत के भी अनेक नियम दिए गए हैं (बहुलं छन्दसि)।
- **लगध (D-IV):**
  - आचार्य लगध को **वेदांग ज्योतिष** के प्रणेता के रूप में जाना जाता है।
  - यह ग्रंथ वैदिक यज्ञों के लिए उचित समय (तिथि, नक्षत्र, मुहूर्त) की गणना करने की विधियों का वर्णन करता है और भारतीय ज्योतिष का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ है।

10. कथन प्रकार (Statement Type)

वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

कथन I: ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित थी और अत्यधिक कठोर नहीं थी।

कथन II: ऋग्वैदिक समाज पूर्णतः मातृसत्तात्मक था, जिसमें स्त्रियों को पुरुषों से अधिक अधिकार प्राप्त थे।

कथन III: 'सभा' और 'समिति' जैसी संस्थाएँ राजनीतिक और सामाजिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

कथन IV: उत्तर वैदिक काल में गोत्र व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था का विकास हुआ।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल कथन II

(2) केवल कथन I और III

(3) केवल कथन II और IV

(4) केवल कथन IV

सही उत्तर: (1) केवल कथन II

स्पष्टीकरण:

- **कथन II (गलत):** ऋग्वैदिक समाज मुख्य रूप से **पितृसत्तात्मक** था, यद्यपि स्त्रियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, वे शिक्षा ग्रहण कर सकती थीं और यज्ञों में भाग ले सकती थीं। उन्हें पुरुषों से अधिक अधिकार प्राप्त होने का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। संपत्ति और वंशानुक्रम मुख्यतः पितृ-आधारित थे।
- **कथन I (सही):** प्रारंभिक ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर कर्म और गुण पर आधारित थी और इसमें लचीलापन था। एक ही परिवार में विभिन्न वर्णों के लोग हो सकते थे। कठोरता बाद के कालों में आई।
- **कथन III (सही):** 'सभा' (वृद्धों और अभिजात वर्ग की परिषद्) और 'समिति' (आम लोगों की सभा) ऋग्वैदिक काल की महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाएँ थीं जो राजा को सलाह देती थीं और महत्वपूर्ण निर्णय लेती थीं।
- **कथन IV (सही):** उत्तर वैदिक काल (लगभग १०००-६०० ईसा पूर्व) में सामाजिक संरचना अधिक जटिल हुई। गोत्र व्यवस्था (समान पूर्वज से उत्पत्ति का सिद्धांत) और आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) का स्पष्ट विकास इसी काल में हुआ।

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट संस्कृत - इकाई-II Mcqs Sample

1. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (वैदिक सूक्त) का सूची II (मुख्य प्रतिपाद्य विषय/अवधारणा) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (वैदिक सूक्त)	सूची II (मुख्य प्रतिपाद्य विषय/अवधारणा)
A. नासदीय सूक्त (ऋग्वेद १०.१२९)	I. विराट् पुरुष से सृष्टि की उत्पत्ति
B. पुरुष सूक्त (ऋग्वेद १०.९०)	II. द्यूतक्रीडा (जुआ) की निन्दा और उससे होने वाली हानि
C. हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋग्वेद १०.१२१)	III. सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व की अज्ञेयता और गहन दार्शनिक चिंतन
D. अक्ष सूक्त (ऋग्वेद १०.३४)	IV. 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' - किस देव की हम हवि से उपासना करें

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-III, B-I, C-IV, D-II

(2) A-I, B-II, C-III, D-IV

(3) A-III, B-IV, C-I, D-II

(4) A-IV, B-I, C-II, D-III

सही उत्तर: (1) A-III, B-I, C-IV, D-II

स्पष्टीकरण:

- **नासदीय सूक्त (ऋग्वेद १०.१२९) (A-III):**
  - यह सूक्त सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व की गहन, अज्ञेय अवस्था का दार्शनिक विवेचन करता है।
  - इसमें 'नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं' (तब न सत् था न असत्) जैसे वाक्यों से उस परम तत्व की अनिर्वचनीयता का संकेत है।
  - यह भारतीय दर्शन में सृष्टि चिंतन का एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदु माना जाता है।
- **पुरुष सूक्त (ऋग्वेद १०.९०) (B-I):**
  - इस सूक्त में एक विराट् पुरुष की कल्पना की गई है, जिसके विभिन्न अंगों से सृष्टि के विविध तत्वों, देवताओं, और चारों वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है।
  - यह सामाजिक संरचना (वर्ण व्यवस्था) का प्राचीनतम साहित्यिक उल्लेख प्रदान करता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋग्वेद १०.१२१) (C-IV):**
  - इस सूक्त में हिरण्यगर्भ (प्रजापति) को सृष्टि के आदि कारण और धारक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
  - प्रत्येक ऋचा के अंत में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' (हम किस देव के लिए हविष्य से यजन करें?) की आवृत्ति इसकी विशिष्टता है, जो अंततः प्रजापति की ओर संकेत करती है।
- **अक्ष सूक्त (ऋग्वेद १०.३४) (D-II):**
  - यह सूक्त एक जुआरी के पश्चात्ताप और द्यूतक्रीडा से होने वाली विनाशकारी हानियों का मार्मिक चित्रण करता है।
  - इसमें जुए की लत से परिवार और सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का वर्णन है और इससे दूर रहने का उपदेश दिया गया है।

2. अभिकथन और तर्क (A and R) प्रकार

अभिकथन (A): कठोपनिषद् में नचिकेता ने यम से आत्मविद्या का उपदेश तीन वरों के रूप में प्राप्त किया।
तर्क (R): यम ने नचिकेता को तृतीय वर के रूप में आत्मतत्व का गूढ़ रहस्य समझाया, जिसमें श्रेय मार्ग (आत्मज्ञान) को प्रेय मार्ग (सांसारिक भोग) से श्रेष्ठ बताया गया।
कूट:
(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य है।
(4) (A) असत्य है परन्तु (R) सत्य है।

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा से संबद्ध कठोपनिषद् में वाजश्रवस के पुत्र नचिकेता और मृत्यु के देवता यम के मध्य प्रसिद्ध संवाद है। नचिकेता अपने पिता द्वारा यज्ञ में क्रुद्ध होकर यम को दिए जाने पर यमलोक पहुँचते हैं और यम से तीन वर प्राप्त करते हैं।
- **तर्क (R) - सत्य:** नचिकेता के प्रथम दो वर सांसारिक थे (पिता का क्रोध शांत होना, स्वर्गसाधक अग्नि विद्या का ज्ञान)। तृतीय वर के रूप में उन्होंने मृत्यु के रहस्य और आत्मतत्व के विषय में पूछा। यम ने प्रारंभ में अनेक प्रलोभन देकर उन्हें इस प्रश्न से विचलित करने का प्रयास किया, परन्तु नचिकेता की दृढ़ता देखकर उन्होंने श्रेय (कल्याणकारी आत्मज्ञान) और प्रेय (प्रिय लगने वाले सांसारिक भोग) का भेद स्पष्ट करते हुए आत्मज्ञान का विस्तृत उपदेश दिया।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **संबंध:** तर्क (R) अभिकथन (A) में वर्णित घटना के महत्वपूर्ण अंश और उसके दार्शनिक महत्व को स्पष्ट करता है, कि कैसे तृतीय वर के माध्यम से आत्मविद्या का उपदेश दिया गया और उसमें श्रेय-प्रेय का विवेचन केंद्रीय था।

3. कथन प्रकार (Statement Type)

छांदोग्योपनिषद् के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

कथन I: इसमें उद्दालक आरुणि और उनके पुत्र श्वेतकेतु का प्रसिद्ध संवाद है, जिसमें 'तत्त्वमसि' महावाक्य का उपदेश नौ बार दिया गया है।

कथन II: इसमें 'भूमा वै सुखम्, नाल्पे सुखमस्ति' (अनंत ही सुख है, अल्प (सीमित) में सुख नहीं) का प्रतिपादन सनत्कुमार-नारद संवाद में किया गया है।

कथन III: यह शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा से संबद्ध है।

कथन IV: इसमें शाण्डिल्य विद्या का वर्णन मिलता है, जो 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म, तज्जलानिति शान्त उपासीत' की शिक्षा देती है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल कथन I, II और IV

(2) केवल कथन I और III

(3) केवल कथन II, III और IV

(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (1) केवल कथन I, II और IV

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** छांदोग्योपनिषद् के छठे अध्याय में उद्दालक आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को विभिन्न दृष्टांतों के माध्यम से अद्वैत ब्रह्म और आत्मा की एकता का उपदेश देते हैं, जिसमें 'तत्त्वमसि' (वह तुम हो) महावाक्य की नौ बार आवृत्ति की गई है।
- **कथन II (सही):** छांदोग्योपनिषद् के सप्तम अध्याय में देवर्षि नारद और सनत्कुमार के मध्य हुए संवाद में सनत्कुमार नारद को भूमा (अनंत, परम तत्व) के स्वरूप का उपदेश देते हुए कहते हैं कि वास्तविक सुख भूमा में ही है, सीमित वस्तुओं में नहीं।
- **कथन IV (सही):** छांदोग्योपनिषद् के तृतीय अध्याय के चौदहवें खण्ड में शाण्डिल्य विद्या का वर्णन है, जिसमें "सर्वं खल्विदं ब्रह्म, तज्जलानिति शान्त उपासीत" (यह सब कुछ निश्चय ही ब्रह्म है; क्योंकि यह उसी से उत्पन्न होता है, उसी में लीन होता है और उसी में प्राण धारण करता है, इसलिए शांत होकर उसकी उपासना करनी चाहिए) का उपदेश है।

- **कथन III (गलत):** छांदोग्योपनिषद् **सामवेद** की कौथुम शाखा के छांदोग्य ब्राह्मण का अंश है, न कि शुक्ल यजुर्वेद का। शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध प्रमुख उपनिषद् बृहदारण्यक और ईशावास्योपनिषद् हैं।

4. बहु-विकल्प प्रकार (Multi-Option Type)

ऋग्वेद में अग्नि देवता के विशिष्ट स्वरूपों और विशेषणों के संबंध में कौन से कथन सत्य हैं?

(A) उन्हें 'पुरोहित', 'ऋत्विज्' और 'होता' (यज्ञ का आह्वान करने वाला) कहा गया है।
(B) वे देवताओं और मनुष्यों के मध्य दूत (हव्यवाहक) का कार्य करते हैं।
(C) उनका एक प्रसिद्ध विशेषण 'जातवेदाः' (सभी उत्पन्न प्राणियों और घटनाओं को जानने वाला) है।
(D) वे मुख्यतः द्युस्थानीय देवता माने जाते हैं।
(E) ऋग्वेद का प्रथम सूक्त (१.१) अग्नि देवता को ही समर्पित है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) केवल (A), (B), और (C)
(2) केवल (A), (B), (C), और (E)
(3) केवल (C), (D), और (E)
(4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

सही उत्तर: (2) केवल (A), (B), (C), और (E)
स्पष्टीकरण:

- **(A) सत्य:** ऋग्वेद के प्रथम मंत्र (अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १.१.१) में ही अग्नि को यज्ञ का पुरोहित, देव, ऋत्विज् और होता कहा गया है।
- **(B) सत्य:** अग्नि को यज्ञ में दी गई हवि को देवताओं तक पहुँचाने वाला 'हव्यवाहक' और देवताओं का मनुष्यों तक संदेश लाने वाला 'दूत' माना गया है।
- **(C) सत्य:** 'जातवेदाः' अग्नि का एक महत्वपूर्ण विशेषण है, जिसका अर्थ है सभी जात (उत्पन्न) पदार्थों को जानने वाला अथवा जातप्रज्ञान (उत्पन्न होते ही ज्ञान से युक्त)।
- **(E) सत्य:** ऋग्वेद का प्रारम्भ अग्नि सूक्त से होता है (ऋग्वेद १.१)। यह ऋग्वेद की संरचना की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
- **(D) गलत:** अग्नि मुख्यतः **पृथ्वीस्थानीय** देवता माने जाते हैं। उनका प्रत्यक्ष रूप यज्ञवेदी पर प्रज्वलित अग्नि है। द्युस्थानीय देवताओं में सूर्य, वरुण आदि प्रमुख हैं।

5. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (औपनिषदिक अवधारणा/संवाद) का सूची II (प्रमुख उपनिषद् स्रोत) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (औपनिषदिक अवधारणा/संवाद)	सूची II (प्रमुख उपनिषद् स्रोत)
A. पञ्चकोश सिद्धान्त (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय)	I. माण्डूक्योपनिषद्
B. आत्मा की चार अवस्थाएँ (जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय)	II. बृहदारण्यकोपनिषद्
C. याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद ('आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति')	III. कठोपनिषद्
D. श्रेय और प्रेय मार्ग का विवेचन	IV. तैत्तिरीयोपनिषद्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-IV, B-I, C-II, D-III

(2) A-I, B-IV, C-III, D-II

(3) A-IV, B-II, C-I, D-III

(4) A-II, B-I, C-IV, D-III

सही उत्तर: (1) A-IV, B-I, C-II, D-III

स्पष्टीकरण:

- **पञ्चकोश सिद्धान्त (A-IV):**
  - आत्मा के पांच आवरणों (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोश) का विस्तृत विवेचन **तैत्तिरीयोपनिषद्** की भृगुवल्ली और ब्रह्मानन्दवल्ली में मिलता है।
- **आत्मा की चार अवस्थाएँ (B-I):**
  - आत्मा की चार अवस्थाओं – जाग्रत् (वैश्वानर), स्वप्न (तैजस), सुषुप्ति (प्राज्ञ) और तुरीय (अद्वैत अवस्था) – का स्पष्ट और संक्षिप्त विवेचन **माण्डूक्योपनिषद्** में ओंकार के मात्राओं के साथ किया गया है।
- **याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद (C-II):**
  - महर्षि याज्ञवल्क्य और उनकी पत्नी मैत्रेयी के मध्य आत्मतत्व और अमरत्व पर गहन दार्शनिक संवाद **बृहदारण्यकोपनिषद्** (द्वितीय अध्याय, चतुर्थ ब्राह्मण तथा चतुर्थ अध्याय, पंचम ब्राह्मण) में वर्णित है। इसी संवाद में 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' (आत्मा के लिए ही सब कुछ प्रिय होता है) का प्रसिद्ध कथन आता है।
- **श्रेय और प्रेय मार्ग का विवेचन (D-III):**
  - श्रेय (कल्याणकारी, आत्मज्ञान का मार्ग) और प्रेय (प्रिय लगने वाला, सांसारिक भोगों का मार्ग) के

मध्य भेद और श्रेय मार्ग की श्रेष्ठता का प्रतिपादन यम द्वारा नचिकेता को **कठोपनिषद्** में किया गया है।

6. अभिकथन और तर्क (A and R) प्रकार

अभिकथन (A): ऐतरेय ब्राह्मण में हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित को शुनःशेप को यज्ञ-पशु के रूप में खरीदने का आख्यान वर्णित है, जिसे शुनःशेप आख्यान कहते हैं।

तर्क (R): यह आख्यान विश्वामित्र द्वारा शुनःशेप को मृत्यु से बचाने और उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करने की घटना के माध्यम से शरणागत की रक्षा और ऋषि के सामर्थ्य को दर्शाता है।

कूट:

(1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(3) (A) सत्य है परन्तु (R) असत्य है।

(4) (A) असत्य है परन्तु (R) सत्य है।

सही उत्तर: (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A) - सत्य:** ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण (सप्तम पंचिका, अध्याय ३३) में प्रसिद्ध शुनःशेप आख्यान का विस्तृत वर्णन है। इसमें राजा हरिश्चन्द्र वरुण देव से पुत्र प्राप्ति का वर मांगते हैं और वचन देते हैं कि वे उसी पुत्र को यज्ञ में अर्पित करेंगे। पुत्र रोहित के युवा होने पर जब यज्ञ की तैयारी होती है, तो रोहित वन में चले जाते हैं और अंततः अजीगर्त ऋषि के मध्यम पुत्र शुनःशेप को यज्ञ-पशु के रूप में खरीदते हैं।
- **तर्क (R) - सत्य:** जब शुनःशेप को यज्ञ-यूप से बांधा जाता है, तो वे विभिन्न देवताओं की स्तुति करते हैं। विश्वामित्र ऋषि उनकी सहायता करते हैं, उन्हें नए मंत्र सिखाते हैं, जिनसे प्रसन्न होकर देवता शुनःशेप को बंधनमुक्त कर देते हैं। विश्वामित्र उन्हें अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करते हैं और देवरात नाम देते हैं। यह आख्यान शरणागत वत्सलता, ऋषि के तपोबल और मंत्र शक्ति के महत्व को रेखांकित करता है, साथ ही यह भी संकेत देता है कि कैसे मानवीय मूल्यों ने यज्ञ की क्रूरता को प्रतिस्थापित किया होगा।
- **संबंध:** तर्क (R) अभिकथन (A) में वर्णित आख्यान के मुख्य घटनाक्रम और उसके निहितार्थ को स्पष्ट करता है, जो आख्यान के उद्देश्य और महत्व को दर्शाता है।

7. कथन प्रकार (Statement Type)

ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त (१०.१९१) के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

कथन I: यह ऋग्वेद के दशम मण्डल का अन्तिम सूक्त है और इस प्रकार सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता का भी अन्तिम सूक्त है।

कथन II: इसमें उपासकों के मध्य समान मन, समान विचार, समान संकल्प और संगठित शक्ति के लिए प्रार्थना की गई है।

कथन III: इसके ऋषि 'संवनन आङ्गिरस' हैं तथा देवता 'संज्ञानम्' (अथवा अग्नि) हैं।

कथन IV: 'समानो मन्त्रः समितिः समानी' (हमारा मन्त्र समान हो, हमारी समिति समान हो) जैसी पंक्तियाँ इसी सूक्त में हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल कथन I, II और IV

(2) केवल कथन I और III

(3) केवल कथन II, III और IV

(4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

सही उत्तर: (4) सभी कथन (I, II, III, और IV) सही हैं

स्पष्टीकरण:

- **कथन I (सही):** संज्ञान सूक्त (ऋग्वेद १०.१९१) ऋग्वेद के दशम मण्डल का १९१वाँ और अंतिम सूक्त है। यह सम्पूर्ण ऋग्वेद संहिता का भी उपसंहारात्मक सूक्त माना जाता है।
- **कथन II (सही):** इस सूक्त का केंद्रीय भाव सामूहिक एकता, वैचारिक सामंजस्य और संगठनात्मक शक्ति का आह्वान है। इसमें कहा गया है कि सभी के मन, संकल्प और चित्त समान हों ताकि उत्तम संगठन बन सके।
- **कथन III (सही):** पारंपरिक रूप से इस सूक्त के ऋषि संवनन (एकत्र करने वाले) आङ्गिरस माने जाते हैं और देवता संज्ञानम् (एकता का भाव) अथवा अग्नि (संगठित करने वाली शक्ति के रूप में) माने जाते हैं।
- **कथन IV (सही):** "समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥" (ऋ. १०.१९१.३) जैसी प्रसिद्ध पंक्तियाँ, जो एकता और समान उद्देश्य का आह्वान करती हैं, इसी सूक्त में पाई जाती हैं।

8. बहु-विकल्प प्रकार (Multi-Option Type)

शिक्षा और छन्द वेदांगों के विशिष्ट अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

(A) पाणिनि शिक्षा में वर्णों के उच्चारण के आठ स्थानों (उरः, कण्ठः, शिरः, जिह्वामूलम्, दन्ताः, नासिकोष्ठौ च तालु च) का उल्लेख है।

(B) वैदिक छन्दों में गायत्री (२४ अक्षर), त्रिष्टुप् (४४ अक्षर) और जगती (४८ अक्षर) सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाले प्रमुख छन्द हैं।

(C) 'यति' का विचार छन्दशास्त्र में अर्थ की स्पष्टता और गायन की सुविधा के लिए पाद के मध्य या अन्त में निर्दिष्ट विराम से संबंधित है।

(D) पिंगल द्वारा रचित 'छन्दःसूत्र' लौकिक एवं वैदिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्राचीनतम एवं प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत करता है।

(E) प्रातिशाख्य ग्रंथ, जैसे ऋक्प्रातिशाख्य, अपने-अपने वेद की शाखा विशेष से संबद्ध उच्चारण, स्वर, संधि आदि नियमों का विस्तृत वर्णन करते हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल (A), (B), और (C)

(2) केवल (A), (B), (D), और (E)

(3) केवल (B), (C), (D), और (E)

(4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

सही उत्तर: (4) सभी (A), (B), (C), (D), और (E)

स्पष्टीकरण:

- **(A) सही:** पाणिनि शिक्षा, जो पाणिनि से संबद्ध मानी जाती है, वर्णोच्चारण के सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन करती है, जिसमें आठ उच्चारण स्थानों का स्पष्ट उल्लेख है।
- **(B) सही:** वैदिक संहिताओं में गायत्री (३ पाद, प्रत्येक में ८ अक्षर), त्रिष्टुप् (४ पाद, प्रत्येक में ११ अक्षर) और जगती (४ पाद, प्रत्येक में १२ अक्षर) ये तीन छन्द सर्वाधिक प्रयुक्त हुए हैं और अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
- **(C) सही:** छन्दशास्त्र में 'यति' का अर्थ है विराम या विश्राम स्थल, जो सामान्यतः पाद के अन्त में होता है, परन्तु कुछ बड़े छन्दों में पाद के मध्य में भी निर्दिष्ट होता है। यह पठन और अर्थ की स्पष्टता के लिए आवश्यक है।
- **(D) सही:** आचार्य पिंगल का 'छन्दःसूत्र' भारतीय छन्दशास्त्र का आदि ग्रन्थ माना जाता है। इसमें वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के लक्षण और भेद अत्यन्त व्यवस्थित रूप से दिए गए हैं।
- **(E) सही:** प्रातिशाख्य ग्रंथ प्रत्येक वेद की विभिन्न शाखाओं से संबंधित हैं और उनमें उस शाखा के

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, पदों की संधि, स्वर प्रक्रिया, क्रमपाठ आदि का सूक्ष्म विवेचन होता है। ये शिक्षा वेदांग के महत्वपूर्ण अंग हैं। (उदाहरण: ऋग्वेद का ऋक्प्रातिशाख्य, शुक्ल यजुर्वेद का वाजसनेयि प्रातिशाख्य)।

9. सुमेलन प्रकार (Matching Type)

सूची I (वैदिक विद्वान्/भाष्यकार) का सूची II (विशिष्ट योगदान/ग्रंथ) के साथ सुमेलन कीजिए:

सूची I (वैदिक विद्वान्/भाष्यकार)	सूची II (विशिष्ट योगदान/ग्रंथ)
A. मैक्स मूलर (Max Müller)	I. The Arctic Home in the Vedas (आर्यों का मूल निवास उत्तरी ध्रुव)
B. बाल गंगाधर तिलक	II. ऋग्वेद संहिता का देवनागरी में प्रथम प्रामाणिक संस्करण एवं Sacred Books of the East का संपादन
C. सायणाचार्य	III. वेदार्थप्रकाश (सम्पूर्ण वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मणों पर विस्तृत भाष्य)
D. श्री अरविन्द (Aurobindo)	IV. The Secret of the Veda (वेदों का आध्यात्मिक, प्रतीकात्मक एवं मनोवैज्ञानिक अर्थ)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) A-II, B-I, C-III, D-IV

(2) A-I, B-II, C-IV, D-III

(3) A-II, B-III, C-I, D-IV

(4) A-IV, B-I, C-III, D-II

सही उत्तर: (1) A-II, B-I, C-III, D-IV

स्पष्टीकरण:

- **मैक्स मूलर (A-II):**
  - जर्मन मूल के प्रसिद्ध भारतविद् और संस्कृत विद्वान् फ्रेडरिक मैक्स मूलर ने ऋग्वेद संहिता का सायण भाष्य सहित संपादन और प्रकाशन किया, जो एक युगांतरकारी कार्य था।
  - उन्होंने "Sacred Books of the East" नामक ग्रंथमाला का संपादन भी किया, जिसमें अनेक भारतीय धर्मग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुए।
- **बाल गंगाधर तिलक (B-I):**

- भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और प्रकाण्ड विद्वान् लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक "The Arctic Home in the Vedas" (१९०३) में ज्योतिषीय और वैदिक साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आर्यों का मूल निवास स्थान उत्तरी ध्रुव (आर्कटिक प्रदेश) था। उनकी एक अन्य प्रसिद्ध कृति "ओरायन या वेदांचा कालनिर्णय" (Orion, or Researches into the Antiquity of the Vedas) भी है।

- **सायणाचार्य (C-III):**
  - १४वीं शताब्दी के विजयनगर साम्राज्य के माध्वाचार्य और सायणाचार्य बंधुओं में से सायणाचार्य ने चारों वेदों की संहिताओं, अनेक ब्राह्मणों और आरण्यकों पर 'वेदार्थप्रकाश' नामक विस्तृत और प्रामाणिक भाष्य लिखा, जो आज भी वैदिक अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।
- **श्री अरविन्द (D-IV):**
  - भारतीय दार्शनिक, योगी और स्वतंत्रता सेनानी श्री अरविन्द घोष ने अपनी कृति "The Secret of the Veda" तथा "Hymns to the Mystic Fire" में वेदों के पारंपरिक कर्मकाण्डीय अर्थों से भिन्न, उनके गहन आध्यात्मिक, प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक अर्थों का उद्घाटन किया।

10. कथन प्रकार (Statement Type)

उपनिषदों में प्रतिपादित दार्शनिक अवधारणाओं के विषय में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

कथन I: बृहदारण्यकोपनिषद् में 'नेति नेति' (यह नहीं, यह नहीं) के द्वारा परब्रह्म के अनिर्वचनीय स्वरूप का निर्देश किया गया है।

कथन II: ईशावास्योपनिषद् कर्म का पूर्ण त्याग कर केवल ज्ञान मार्ग से मोक्ष प्राप्ति का समर्थन करता है, जैसा कि 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' मंत्र से स्पष्ट है।

कथन III: मुण्डकोपनिषद् में ब्रह्मा द्वारा अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को ब्रह्मविद्या का उपदेश देने का उल्लेख है तथा इसमें परा विद्या (ब्रह्मज्ञान) और अपरा विद्या (सांसारिक ज्ञान) का भेद बताया गया है।

कथन IV: तैत्तिरीयोपनिषद् की भृगुवल्ली में वरुण द्वारा अपने पुत्र भृगु को तप के माध्यम से अन्नमय कोश से लेकर आनन्दमय कोश तक ब्रह्म के स्वरूप का साक्षात्कार करने का उपदेश दिया गया है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(1) केवल कथन I

(2) केवल कथन II

(3) केवल कथन III

(4) केवल कथन IV

सही उत्तर: (2) केवल कथन II

स्पष्टीकरण:

- **कथन II (गलत):** ईशावास्योपनिषद् कर्म का पूर्ण त्याग नहीं, बल्कि **कर्म और ज्ञान के समन्वय** का प्रतिपादन करता है। "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ् समाः" (इस लोक में कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए - ईश. २) मंत्र निष्काम कर्मयोग का समर्थन करता है। तथा "विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥" (ईश. ११) मंत्र विद्या (ज्ञान) और अविद्या (कर्म/सांसारिक ज्ञान) दोनों को साथ जानने पर बल देता है, जिससे अविद्या (कर्म) से मृत्यु को पार कर विद्या (ज्ञान) से अमृतत्व की प्राप्ति होती है। अतः यह कथन कि यह केवल ज्ञान मार्ग का समर्थन करता है और कर्म के पूर्ण त्याग का, गलत है।
- **कथन I (सही):** बृहदारण्यकोपनिषद् (जैसे २.३.६, ४.४.२२) में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करते हुए 'नेति नेति' (न इति न इति - यह ऐसा नहीं है, यह ऐसा नहीं है) पद्धति का प्रयोग किया गया है, जो दर्शाता है कि ब्रह्म को सकारात्मक गुणों से परिभाषित नहीं किया जा सकता, वह वर्णनातीत है।
- **कथन III (सही):** मुण्डकोपनिषद् का प्रारम्भ ब्रह्मा द्वारा अथर्वा को ब्रह्मविद्या के उपदेश से होता है। इसी उपनिषद् में दो प्रकार की विद्याओं – परा (जिससे अक्षर ब्रह्म का ज्ञान होता है) और अपरा (ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि वेद-वेदांग रूपी ज्ञान) – का विवेचन किया गया है (मुण्डक १.१.४-५)।
- **कथन IV (सही):** तैत्तिरीयोपनिषद् की तृतीय वल्ली (भृगुवल्ली) में वरुण अपने पुत्र भृगु को तपस्या के द्वारा क्रमशः अन्न, प्राण, मन, विज्ञान और आनन्द को ब्रह्म के रूप में जानने का उपदेश देते हैं, जो पञ्चकोश सिद्धान्त से संबंधित है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

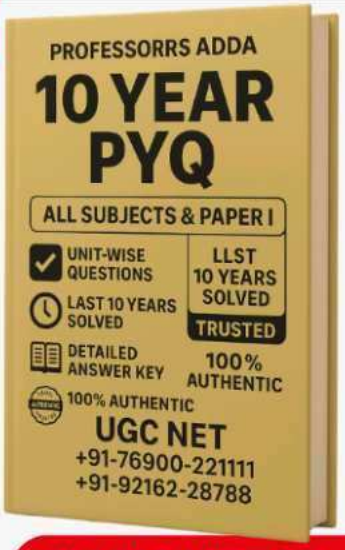

CLICK HERE

NEW PRODUCT

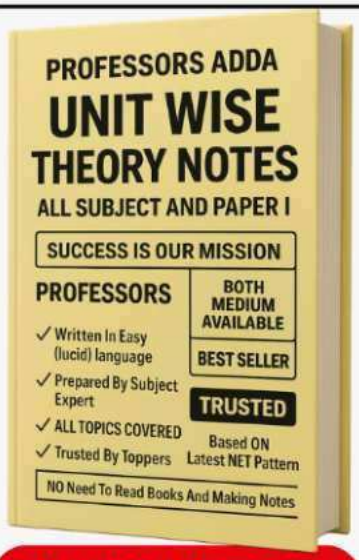

CLICK HERE

NEW PRODUCT

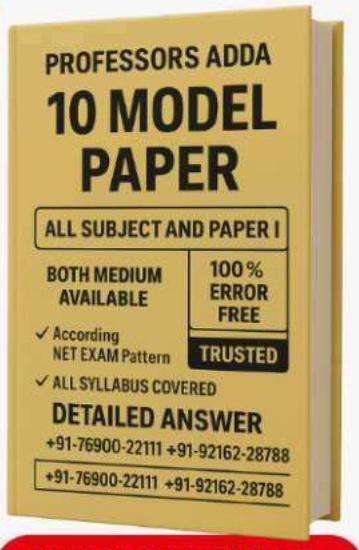

CLICK HERE

NEW PRODUCT

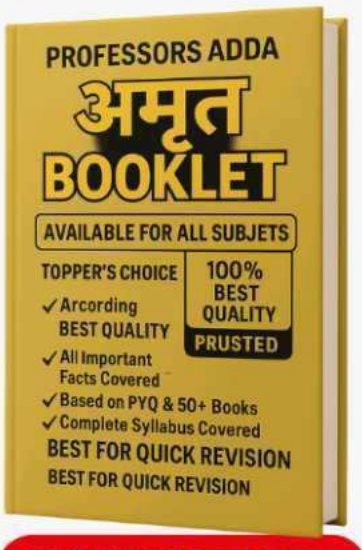

CLICK HERE

NEW PRODUCT

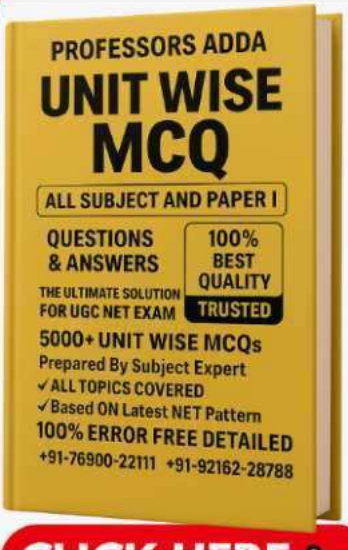

CLICK HERE

NEW PRODUCT

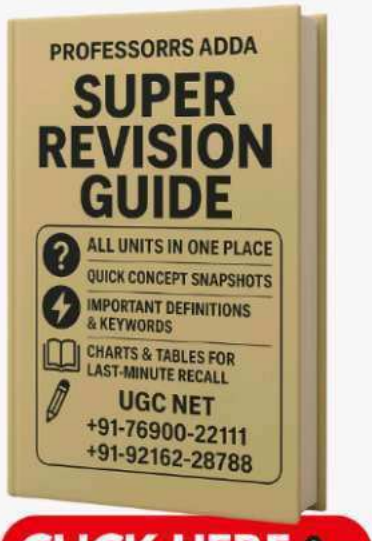

CLICK HERE

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

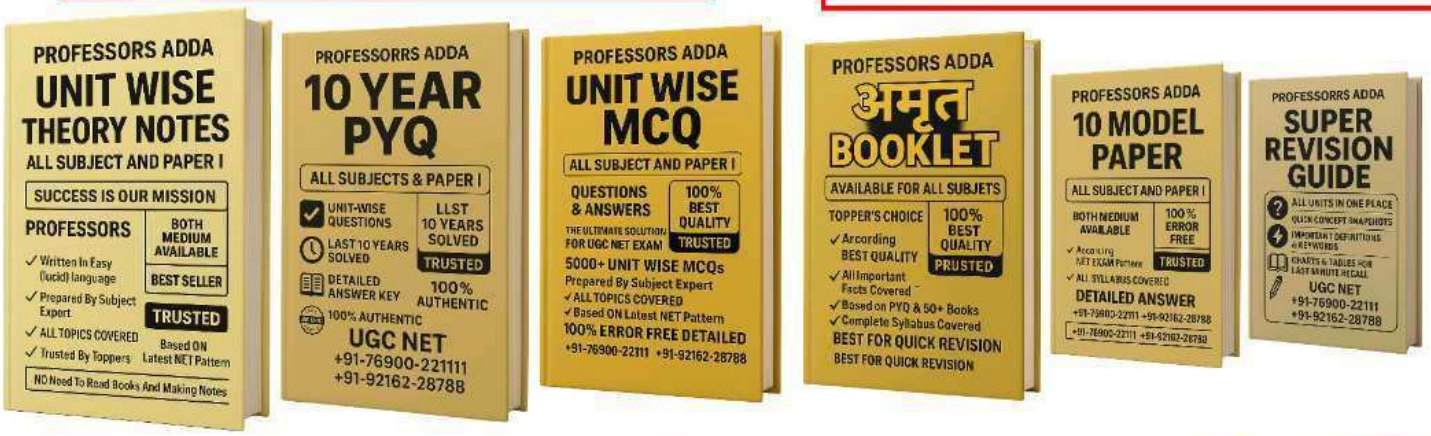

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

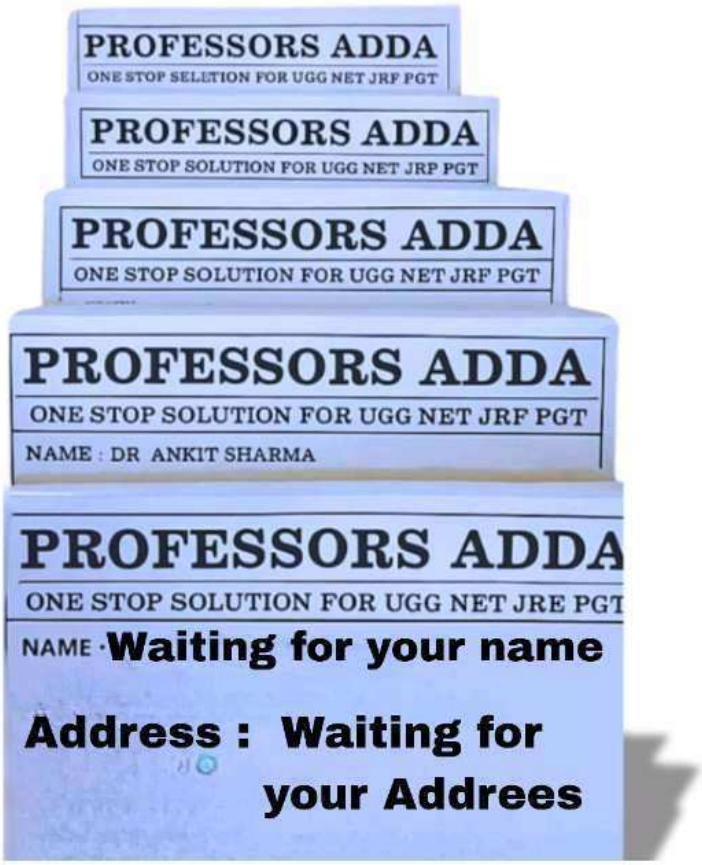

FREE DELIVERY | CASH ON DELIVERY | TRUSTED | LOW PRICE | CUSTOMER SATISFACTION 100 GUARANTEE

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

UNIT WISE THEORY NOTES

ALL SUBJECT AND PAPER I

UGC NET

BOTH MEDIUM AVAILABLE

+91-76900-22111 +91-92162-28788

UGC NET संस्कृत UNIT WISE ट्रेंड विश्लेषण

यह विश्लेषण UGC NET संस्कृत पाठ्यक्रम में दिए गए प्रश्न पैटर्न और संरचना पर आधारित है। यह संस्कृत विषय के लिए संभावित प्रश्न प्रकारों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों का एक अनुमानित ढाँचा प्रस्तुत करता है, ताकि आपको अपनी तैयारी की रणनीति बनाने में सहायता मिल सके।

1. प्रश्नों के प्रकारों में संतुलनः

इतिहास के PYQ विश्लेषण के समान, UGC NET संस्कृत की परीक्षा में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का संतुलन देखा जा सकता है। प्रमुख प्रश्न प्रकार इस प्रकार हैं:

- **तथ्यात्मक पहचानः** वैदिक सूक्तों के ऋषि, देवता, छंद; ब्राह्मण ग्रंथों के प्रतिपाद्य विषय, यज्ञों के नाम; उपनिषदों की विषयवस्तु और अवधारणाएँ; दार्शनिक सिद्धांतों के प्रवर्तक, ग्रंथ; व्याकरण के सूत्र, परिभाषाएँ, वार्तिककार; साहित्यकारों की रचनाएँ, काल; काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के प्रवर्तक, परिभाषाएँ; छंदों के लक्षण; पुराणों, स्मृतियों की विषयवस्तु; अभिलेखों के स्थान, शासक, लिपि; और प्रमुख शब्दों की व्युत्पत्ति की सीधी पहचान पर आधारित प्रश्न। (उदाहरणः 'पुरुष सूक्त' किस वेद में है? 'सत्कार्यवाद' किस दर्शन से संबंधित है? 'अष्टाध्यायी' के लेखक कौन हैं?)
- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** वैदिक काल के विभिन्न भाग (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्); दार्शनिक संप्रदायों का विकास क्रम; प्रमुख व्याकरणचार्यों का क्रम; प्रमुख साहित्यकारों और उनकी रचनाओं का क्रम; या प्रमुख अभिलेखों का कालानुक्रमिक क्रम व्यवस्थित करने वाले प्रश्न। यह संस्कृत साहित्य और चिंतन के ऐतिहासिक विकास की समझ का परीक्षण करता है।
- **मिलान (Matching):** सूक्तों को उनके देवताओं/ऋषियों से, उपनिषदों को उनकी विषयवस्तु से, दार्शनिक सिद्धांतों को उनके प्रवर्तकों/दर्शनों से, व्याकरणिक परिभाषाओं को उनके सूत्रों से, साहित्यकारों को उनकी रचनाओं से, काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों को उनके आचार्यों से, छंदों को उनके लक्षणों से, स्मृतियों को उनकी विषयवस्तु से, या अभिलेखों को उनके स्थान/शासक से मिलाने वाले प्रश्न।
- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason):** किसी संस्कृत कथन, विशिष्ट अवधारणा, दार्शनिक तर्क, व्याकरणिक नियम, साहित्यिक विशेषता या ऐतिहासिक तथ्य और उसके अंतर्निहित कारण/तर्क के बीच संबंध का मूल्यांकन करने वाले प्रश्न। (उदाहरणः अभिकथन (A): वैदिक स्वरों का अपना महत्व है। कारण (R): वैदिक मंत्रों के उच्चारण में स्वरभेद से अर्थभेद होता है।)

PROFESSORS ADDA

- **स्रोत आधारित प्रश्नः** पाठ्यक्रम में निर्धारित विशिष्ट सूक्तों, ब्राह्मण ग्रंथों के आख्यानों, उपनिषदों के अंशों, दार्शनिक ग्रंथों के सूत्रों/कारिकाओं, व्याकरण के सूत्रों/महाभाष्य के अंशों, साहित्यिक रचनाओं (पद्य, नाट्य, गद्य, चम्पू) के अंशों, या अभिलेखों के पाठ पर आधारित प्रश्न, जो मूल पाठ की समझ, व्याख्या, विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं।
- **अवधारणात्मक समझः** वैदिक अवधारणाओं (ऋत, यज्ञ, ब्रह्म), दार्शनिक सिद्धांतों (सत्कार्यवाद, विवर्तवाद, अनेकांतवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद), व्याकरणिक सिद्धांतों (स्फोट), काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति), या धर्मशास्त्रीय/अर्थशास्त्रीय अवधारणाओं की समझ का परीक्षण करने वाले प्रश्न।
- **बहु-विकल्पीय कथन (Multiple Correct Statements):** किसी सूक्त, ग्रंथ, दार्शनिक मत, व्याकरणिक नियम, साहित्यकार, रचना, या अभिलेख के बारे में दिए गए कई कथनों में से सही या गलत कथनों के समूह की पहचान करने वाले प्रश्न। ये विस्तृत और सूक्ष्म ज्ञान का परीक्षण करते हैं।
- **अनुच्छेद आधारित प्रश्न (Passage-based Questions):** संस्कृत के किसी अंश (वैदिक, दार्शनिक, साहित्यिक) या किसी आलोचनात्मक/व्याख्यात्मक लेख पर आधारित प्रश्न, जो पाठ की समझ, व्याख्या, विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं।

2. कठिनाई स्तर और कौशल परीक्षणः

परीक्षा में केवल तथ्यात्मक स्मरण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि वैदिक मंत्रों, दार्शनिक सिद्धांतों, व्याकरणिक नियमों, और साहित्यिक रचनाओं की गहरी समझ, मूल ग्रंथों का विश्लेषण, विभिन्न संप्रदायों और विधाओं के बीच संबंध स्थापित करने और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता पर भी जोर दिया जाता है।

- कालानुक्रमिक और मिलान वाले प्रश्नों के लिए व्यापक और सटीक तथ्यात्मक ज्ञान आवश्यक है।
- अभिकथन-कारण और स्रोत-आधारित प्रश्न विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक कौशल की मांग करते हैं, विशेष रूप से मूल संस्कृत ग्रंथों की समझ।
- दर्शन, व्याकरण, और काव्यशास्त्र संबंधी प्रश्न सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक कौशल का परीक्षण करते हैं।

3. नवीनतम रुझानः

पिछले कुछ वर्षों के रुझानों के आधार पर, निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है:

- पाठ्यक्रम में शामिल विशिष्ट सूक्तों, उपनिषदों, दार्शनिक कारिकाओं/सूत्रों, व्याकरणिक सूत्रों/महाभाष्य के अंशों, और साहित्यिक रचनाओं (इकाई II, IV, VI, VIII, X) से सीधे और गहरे प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इन रचनाओं का मूलपाठ पढ़ना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

PROFESSORS ADDA

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

UGC NET 50 DAY TARGETED PROGRAM

PAPER 1 BOTH MEDIUM

FEATURES

1. 150 TOPICS COVERED
2. DAILY 3 TOPICS STUDY PLAN
3. PRACTICE WITH MCQs + PDFs
4. WEEKLY MOCK TESTS
5. CONCEPT MIND MAPS
6. PERSONAL MENTORSHIP
7. DOUBT-SOLVING SUPPORT

PROFESSORS ADDA

BENEFITS

1. Easy language notes
2. No confusion
3. What to read & how to read
4. Consistency ensured
5. Practice + Clarity
6. Focus on only important topics

सभी Important टॉपिक्स पर फोकस

समय की बचत, तैयारी ज़बरदस्त ।

click here to join

+91 7690022111+91 9216228788

यू.जी.सी. नेट (पुनः परीक्षा) संस्कृत 30-08-2024

1. प्रमाणानाम् अङ्गीकारदृष्ट्या अनयोः सम्बन्धः भवति-
A. पौराणिकः
B. भासर्वज्ञः
C. भाट्टः
D. उद्यनः
E. सांख्यः
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) A & C केवलम्
(b) B & E केवलम्
(c) C & D केवलम्
(d) E & A केवलम्

Ans. (b)

2. ऋक्-मन्त्राणां लक्षणमिदम्-
A. गीतिः
B. अर्थः
C. पादव्यवस्था
D. प्रश्लिष्टपठितत्वम्
E. मननरूपत्वम्
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) A & B केवलम्
(b) C & D केवलम्
(c) B & C केवलम्
(d) B & E केवलम्

Ans. (c)

3. पुराणपञ्चलक्षणं क्रमेण स्थापयत-
A. वंशानुचरितम्
B. मन्वन्तरम्
C. वंशः
D. प्रतिसर्गः
E. सर्गः
दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-
(a) A, C, D, B, E
(b) E, C, D, A, B
(c) E, D, C, B, A
(d) A, B, C, D, E

PROFESSORS ADDA

Ans. (c)

4. परस्परं समुचितं मेलयत-

LIST-I	LIST-II
A. मत्सरी	I. खरः
B. परिभोक्ता	II. श्वा
C. परिवादी	III. कीटः
D. निन्दकः	IV. कृमिः

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत-
(a) A-III, B-II, C-I, D-IV
(b) A-III, B-IV, C-I, D-II
(c) A-IV, B-III, C-I, D-II
(d) A-II, B-III, C-I, D-IV

Ans. (b)

5. विकृतीनाम् अर्थ क्रमः-
A. रेखा
B. माला
C. घनः
D. दण्डः
E. ध्वजः
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) A, B, C, D, E
(b) B, A, E, D, C
(c) A, D, E, B, C
(d) C, A, D, E, B

Ans. (b)

6. रामायणकाण्डानि केन नाम्ना विभक्तानि?
(a) अध्यायेन
(b) परिच्छेदेन
(c) सर्गेण
(d) पर्वणा

Ans. (c)

7. "गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेष कृञः" इति सूत्रे अवक्षेपणमित्यस्य कोऽर्थः?
(a) प्रेरणम्
(b) हिंसा
(c) निन्दा
(d) भर्त्सनम्

Ans. (d)

PROFESSORS ADDA

8. मारीचपुराणं कीदृशमुपपुराणमस्ति ?
(a) सौरम्
(b) शैवम्
(c) वैष्णवम्
(d) शाक्तम्

Ans. (c)

9. सधर्मवस्तुप्रतिबिम्बनमूलोऽलङ्कारः कः?
(a) दृष्टान्तः
(b) विभावना
(c) स्वभावोक्तिः
(d) अर्थान्तरन्यासः

Ans. (a)

10. भगवतः स्वरूपमत्र अवलोकयितुं शक्यते-
A. स्तोभाक्षरे
B. प्रणवे
C. ऋचि
D. सानि
E. अथर्वणि
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) E & A केवलम्
(b) B & D केवलम्
(c) A & C केवलम्
(d) C & D केवलम्

Ans. (b)

11. याज्ञवल्क्यानुसारेण अधिकलाभार्थम् अर्जनार्थं वा स्वीकृत्य समुद्रं प्रति ये गच्छन्ति तेभ्यः कियान् भागः वृद्धिरूपेण स्वीकर्तव्यः?
(a) अर्धांशं शतम्
(b) पञ्चकं शतम्
(c) दशकं शतम्
(d) विंशकं शतम्

Ans. (d)

12. लिङ्गप्रमाणस्य दैविध्यं भवति-
A. असामान्यसम्बन्धबोधकप्रमाणान्तरसापेक्षम्
B. सामान्यसम्बन्धबोधक प्रमाणान्तरसापेक्षम्
C. सामान्यासम्बन्धबोधक प्रमाणान्तरसापेक्षम्
D. सामान्यसम्बन्धबोधकप्रमाणान्तरानपेक्षम्
E. सामान्यासम्बन्धबोधकप्रमाणान्तरानपेक्षम्

PROFESSORS ADDA

समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) B & D केवलम्
(b) A & B केवलम्
(c) C & E केवलम्
(d) D & A केवलम्

Ans. (a)

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ⬇

1. **Concept/ Theory pdf Notes**
2. **MCQ Quiz**
3. **Latest PYQs**
4. **Quick Revision Amriut**
5. **Model Test Papers**
6. **Current Affairs Focus**
7. **All India Rank**
8. **Latest exam Updates**
9. **Brain Booster facts**

Free Free --- Join UGC NET
Subject wise Free study group.
ALL subject available.
send us Subject + medium on this number 7690022111. Our team will add you
Click on link to join
https://wa.link/9r0r0

Don't Miss this opportunity
Join & share..... आज ही जुड़े और अपनी **NET / JRF** एक बार मे सफलता सुनिश्चित करे .
Contact to team to join +91 769000-22111 +91 92162-28788

13. केन कविना इन्द्रायुधनामा अश्वः स्वकाव्ये वर्णितः?
(a) विशाखदत्तेन
(b) माघेन
(c) अश्वघोषेण
(d) बाणभट्टेन

Ans. (d)

14. क्रमबोधकप्रमाणेषु क्रमः-
A. स्थानम्
B. प्रवृत्तिः
C. अर्थः
D. मुख्यः
E. पाठः
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) B, D, E, A, C
(b) A, B, C, D, E
(c) A, C, D, E, B
(d) C, E, A, D, B

Ans. (d)

15. कौटिलीयेऽर्थशास्त्रे वेदाङ्गनामयं क्रमः सूचितः-
A. कल्पः
B. निरुक्तम्
C. शिक्षा
D. व्याकरणम्
E. ज्यौतिषम्
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) C, A, D, B, E
(b) A, E, B, C, D
(c) A, B, C, D, E
(d) E, D, C, B, A

Ans. (a)

16. पारिवारिकंवर्गीकरणानुसारेण अफ्रीकाभूखण्डस्य परिवारः एषु कोऽस्ति ?
(a) द्राविडपरिवारः
(b) बान्तूपरिवारः
(c) बास्कपरिवारः
(d) पापुईपरिवारः

Ans. (b)

17. महाकाव्येतरकृतीः चिनुत-
A. दशकुमारचरितम्
B. नैषधीयचरितम्
C. बुद्धचरितम्
D. उत्तररामचरितम्
E. हर्षचरितम्
समुचितं विकल्पं चिनुत-
(a) A, B, C केवलम्
(b) B, C, D केवलम्
(c) C, D, E केवलम्
(d) A, D, E केवलम्

Ans. (d)

18. विकर्षणादिः भवति-
(a) साम
(b) मात्रा
(c) सन्तानः
(d) स्वरः

Ans. (c)

PROFESSORS ADDA

अमृत AMRIT BOOKLET

AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS

UGC NET

TOPPER'S CHOICE

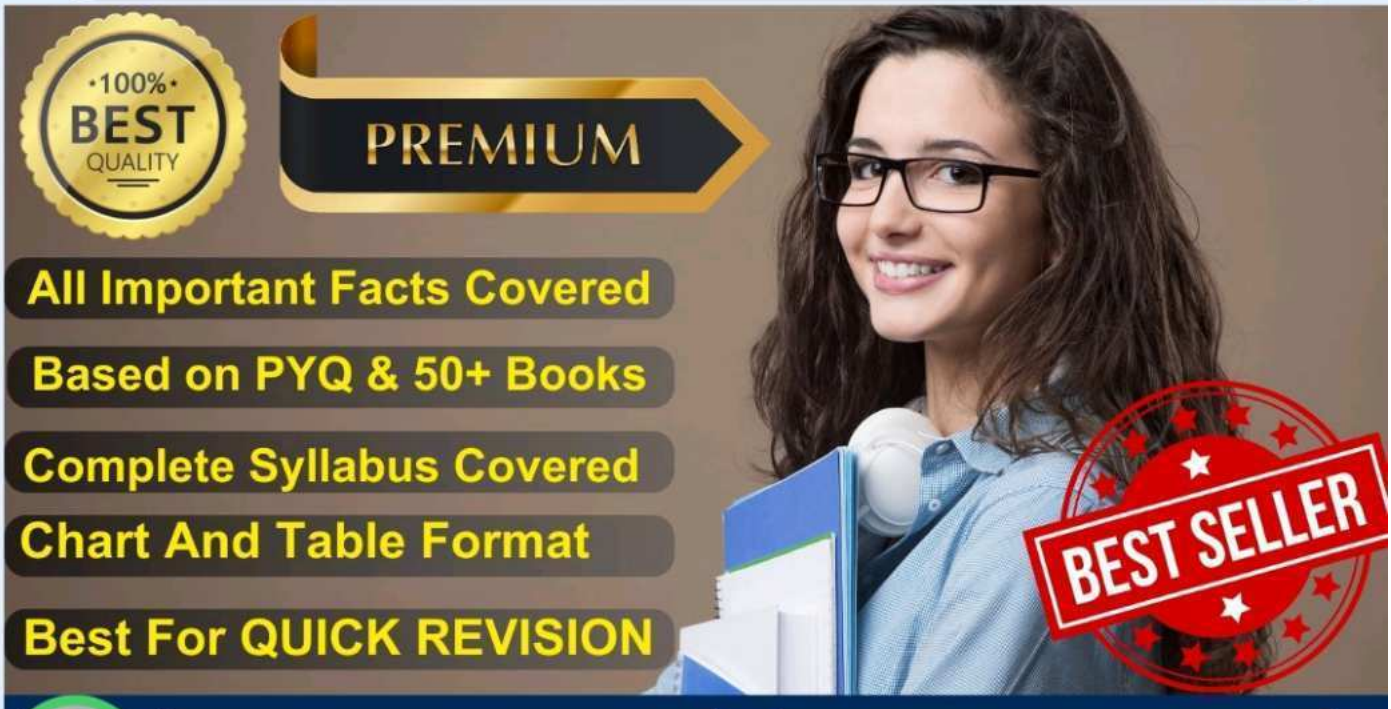

+91-76900-22111 +91-92162-28788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

संस्कृत यूजीसी नेट: 50 PYQ-आधारित वन-लाइनर्स

1. प्रश्न: 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इस प्रसिद्ध मन्त्र से किस वेद का आरम्भ होता है?
   उत्तर: ऋग्वेद का।
2. प्रश्न: 'पुरुषसूक्त', जिसमें चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है, ऋग्वेद के किस मण्डल में प्राप्त होता है?
   उत्तर: दशम मण्डल में।
3. प्रश्न: 'शतपथब्राह्मण' नामक प्रसिद्ध ब्राह्मण-ग्रन्थ किस वेद से सम्बद्ध है?
   उत्तर: शुक्लयजुर्वेद से।
4. प्रश्न: 'कठोपनिषद्', जिसमें यम और नचिकेता का प्रसिद्ध संवाद वर्णित है, किस वेद की उपनिषद् है?
   उत्तर: कृष्णयजुर्वेद की।
5. प्रश्न: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष - इन छः शास्त्रों को सम्मिलित रूप से क्या कहा जाता है?
   उत्तर: वेदाङ्ग।
6. प्रश्न: यास्काचार्य द्वारा विरचित 'निरुक्तम्' किस वेदाङ्ग का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है?
   उत्तर: निरुक्त (शब्द-व्युत्पत्ति शास्त्र)।
7. प्रश्न: 'सत्यमेव जयते' यह प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्श-वाक्य किस उपनिषद् से लिया गया है?
   उत्तर: मुण्डकोपनिषद्।
8. प्रश्न: 'तत्त्वमसि' यह महावाक्य, जो जीव और ब्रह्म की एकता को प्रतिपादित करता है, किस उपनिषद् में पाया जाता है?
   उत्तर: छान्दोग्योपनिषद्।
9. प्रश्न: सांख्यदर्शन के प्रणेता कौन माने जाते हैं, जिन्होंने प्रकृति-पुरुष के द्वैतवाद का प्रतिपादन किया?
   उत्तर: कपिल मुनि।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

10. प्रश्न: 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' - योग की यह प्रसिद्ध परिभाषा महर्षि पतञ्जलि ने किस ग्रन्थ में दी है?

उत्तर: योगसूत्र में।

11. प्रश्न: 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इस सूत्र से किस दार्शनिक ग्रन्थ का आरम्भ होता है?

उत्तर: ब्रह्मसूत्र (वेदान्त दर्शन)।

12. प्रश्न: 'पदार्थ' के रूप में द्रव्य, गुण, कर्म आदि की विस्तृत विवेचना करने वाले वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कौन हैं?

उत्तर: कणाद।

13. प्रश्न: 'अद्वैत वेदान्त' के सिद्धान्त का प्रवर्तन किसने किया, जिन्होंने 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' का उद्घोष किया?

उत्तर: आदि शंकराचार्य।

14. प्रश्न: 'अष्टाध्यायी' नामक प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ, जिसमें लगभग चार हज़ार सूत्र हैं, की रचना किसने की?

उत्तर: पाणिनि ने।

15. प्रश्न: पाणिनि के सूत्रों पर 'महाभाष्य' नामक विस्तृत टीका किस वैयाकरण ने लिखी?

उत्तर: पतञ्जलि ने।

16. प्रश्न: 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' - यह प्रसिद्ध रससूत्र किस आचार्य ने किस ग्रन्थ में दिया है?

उत्तर: भरतमुनि ने, नाट्यशास्त्र में।

17. प्रश्न: 'ध्वन्यालोक' नामक ग्रन्थ में 'ध्वनि' को काव्य की आत्मा के रूप में किस आचार्य ने स्थापित किया?

उत्तर: आनन्दवर्धन ने।

18. प्रश्न: 'काव्यप्रकाश' नामक प्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: आचार्य मम्मट।

19. प्रश्न: 'वक्रोक्तिजीवितम्' नामक ग्रन्थ में 'वक्रोक्ति' को काव्य का जीवन किसने

माना है?

उत्तर: आचार्य कुन्तक।

20. प्रश्न: 'रामायण' के रचयिता कौन हैं, जिन्हें 'आदिकवि' भी कहा जाता है?

उत्तर: वाल्मीकि।

21. प्रश्न: 'महाभारत', जिसे 'शतसाहस्री संहिता' भी कहते हैं, के रचयिता कौन माने जाते हैं?

उत्तर: वेदव्यास।

22. प्रश्न: 'मनुस्मृति', जो एक प्रमुख धर्मशास्त्र ग्रन्थ है, के प्रणेता कौन हैं?

उत्तर: मनु।

23. प्रश्न: कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रन्थ मुख्य रूप से किस विषय से संबंधित है?

उत्तर: राजनीति एवं प्रशासन।

24. प्रश्न: भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नायक कौन है?

उत्तर: उदयन।

25. प्रश्न: कालिदास द्वारा विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में नायिका शकुन्तला किस ऋषि की पोषित पुत्री थी?

उत्तर: कण्व ऋषि की।

26. प्रश्न: 'मेघदूतम्', जो एक प्रसिद्ध खण्डकाव्य है, में यक्ष को कहाँ निर्वासित किया गया था?

उत्तर: रामगिरि पर्वत पर।

27. प्रश्न: 'रघुवंशम्' महाकाव्य में किस वंश के राजाओं का वर्णन कालिदास ने किया है?

उत्तर: इक्ष्वाकु वंश (सूर्यवंश)।

28. प्रश्न: 'मृच्छकटिकम्' नामक प्रसिद्ध प्रकरण (नाटक) के रचयिता कौन हैं, जिसमें चारुदत्त और वसन्तसेना की कथा है?

उत्तर: शूद्रक।

29. प्रश्न: 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य, जो 'बृहत्त्रयी' में शामिल है, के लेखक कौन

हैं?

उत्तर: भारवि।

30. प्रश्न: 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य की रचना किसने की?

उत्तर: माघ।

31. प्रश्न: बाणभट्ट द्वारा रचित 'कादम्बरी' किस गद्य-विधा की रचना है?

उत्तर: कथा।

32. प्रश्न: 'हर्षचरितम्', जो राजा हर्षवर्धन का जीवन-चरित है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: बाणभट्ट।

33. प्रश्न: भवभूति द्वारा रचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक किस रस की प्रधानता के लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर: करुण रस।

34. प्रश्न: 'दशकुमारचरितम्' नामक प्रसिद्ध गद्यकाव्य के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: दण्डी।

35. प्रश्न: 'पञ्चतन्त्र', जो विश्व-प्रसिद्ध कथा-संग्रह है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: विष्णुशर्मा।

36. प्रश्न: 'हितोपदेश' नामक कथा-ग्रन्थ की रचना किसने की?

उत्तर: नारायण पण्डित।

37. प्रश्न: 'गीतगोविन्द' नामक काव्य, जिसमें राधा-कृष्ण की केलियों का वर्णन है, के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: जयदेव।

38. प्रश्न: 'नैषधीयचरितम्', जो बृहत्त्रयी का एक अंग है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: श्रीहर्ष।

39. प्रश्न: 'मुद्राराक्षस' नामक ऐतिहासिक नाटक, जिसमें चाणक्य की कूटनीति का वर्णन है, किसने लिखा?

उत्तर: विशाखदत्त।

40. प्रश्न: अश्वघोष द्वारा रचित 'बुद्धचरितम्' किस विधा की रचना है?

उत्तर: महाकाव्य।

41. प्रश्न: अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कौन माने जाते हैं?
उत्तर: भामह।

42. प्रश्न: 'काव्यमीमांसा' नामक ग्रन्थ के लेखक कौन हैं?
उत्तर: राजशेखर।

43. प्रश्न: 'साहित्यदर्पण' नामक विशाल काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ किसने लिखा?
उत्तर: विश्वनाथ।

44. प्रश्न: 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' - काव्य की यह परिभाषा किस आचार्य ने दी है?
उत्तर: भामह ने।

45. प्रश्न: 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' - काव्य की यह प्रसिद्ध परिभाषा किसकी है?
उत्तर: विश्वनाथ की।

46. प्रश्न: नाट्यशास्त्र के अनुसार, नाटक में कितने रस माने गए हैं?
उत्तर: आठ।

47. प्रश्न: 'उपमा कालिदासस्य' इस उक्ति के अनुसार उपमा अलंकार के सर्वश्रेष्ठ प्रयोग के लिए कौन प्रसिद्ध है?
उत्तर: कालिदास।

48. प्रश्न: 'गौड़ीय' रीति का सम्बन्ध किस क्षेत्र से माना जाता है?
उत्तर: गौड़ (बंगाल) प्रदेश से।

49. प्रश्न: 'भास' के कुल कितने नाटक खोजे गए हैं, जिनका प्रकाशन टी. गणपति शास्त्री ने किया?
उत्तर: तेरह (13)।

50. प्रश्न: 'अभिधा, लक्षणा और व्यंजना' - ये तीन क्या हैं?
उत्तर: शब्द-शक्तियाँ।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books** – वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula"

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print
📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

संस्कृत Thinker Tool Kit Sample

1. यास्काचार्य

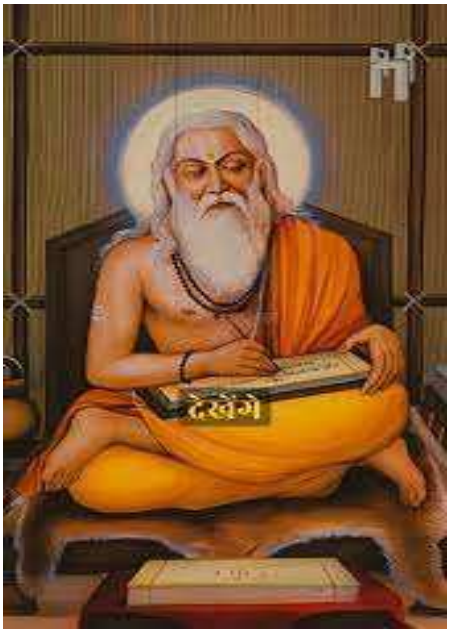

परिचय

- वे प्राचीन भारत के एक महान संस्कृत वैयाकरण और निरुक्तकार थे।
- उन्हें पाणिनि से पूर्व का माना जाता है (अनुमानतः 7वीं से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व)।
- वे 'निरुक्त' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं, जो छः वेदांगों में से एक है।
- यास्क को वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ-विवेचन का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण आचार्य माना जाता है।
- उनका कार्य वैदिक मंत्रों के अर्थ को समझने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- निरुक्त की रचना: 'निरुक्त' वैदिक शब्द-सूची 'निघण्टु' पर एक विस्तृत भाष्य है, जिसमें कठिन वैदिक शब्दों की व्याख्या की गई है।
- शब्दों का चतुर्विध विभाजन: उन्होंने विश्व में पहली बार शब्दों को चार वर्गों में विभाजित किया - नाम (संज्ञा), आख्यात (क्रिया), उपसर्ग, और निपात।
- व्युत्पत्ति का सिद्धांत: उनका मत था कि सभी नाम (संज्ञा शब्द) धातुज होते हैं, अर्थात् वे किसी न किसी क्रिया-मूल (धातु) से उत्पन्न हुए हैं।
- अर्थ-ज्ञान की कुंजी: यास्क ने स्थापित किया कि मंत्रों का सही अर्थ जानने के लिए उनकी व्युत्पत्ति (etymology) का ज्ञान अनिवार्य है।
- अर्थ की त्रिविध प्रक्रिया: उन्होंने वेदों की व्याख्या के तीन दृष्टिकोण बताए - आधिदैविक (देवताओं से संबंधित), आध्यात्मिक (आत्मा से संबंधित), और आधियज्ञिक (यज्ञ से संबंधित)।
- निरुक्त के उद्देश्य: उन्होंने निरुक्त के तीन मुख्य उद्देश्य बताए: (1) पदों का संग्रह, (2) पदों का विभाजन, और (3) पदों की व्युत्पत्ति।
- मंत्रार्थ का महत्व: उन्होंने उन लोगों की आलोचना की जो बिना अर्थ जाने वेदों का पाठ करते हैं, और मंत्रों के अर्थ-ज्ञान पर अत्यधिक बल दिया।
- वैदिक व्याख्या के प्रवर्तक: वे वैदिक व्याख्याशास्त्र के प्रथम आचार्य माने जाते हैं, जिन्होंने परवर्ती

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

भाष्यकारों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- निरुक्तम्: यह उनका एकमात्र उपलब्ध ग्रंथ है, जो वेदांग का एक अभिन्न अंग है। यह वैदिक शब्द-व्युत्पत्ति शास्त्र का आधार स्तंभ है।

रोचक तथ्य

- आचार्य यास्क को भारतीय परंपरा में "व्युत्पत्ति शास्त्र का जनक" (Father of Etymology) कहा जाता है और उनका 'निरुक्त' विश्व का पहला व्युत्पत्ति-कोश माना जाता है।

2. सायणाचार्य

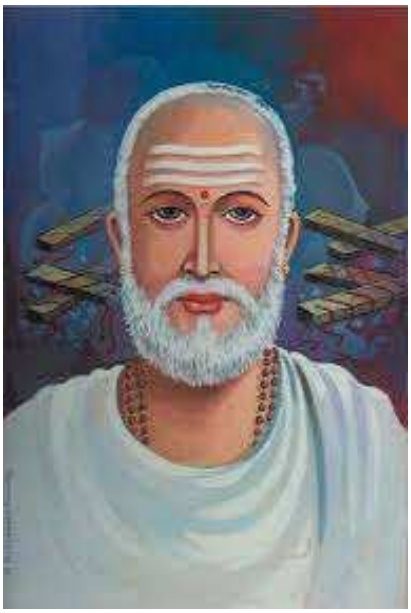

परिचय

- वे 14वीं शताब्दी के एक महान संस्कृत विद्वान और वेदों के सर्वप्रमुख भाष्यकार थे।
- वे विजयनगर साम्राज्य के शासक बुक्का प्रथम और हरिहर द्वितीय के दरबार में मंत्री और गुरु थे।
- उन्होंने लगभग संपूर्ण वैदिक वाङ्मय (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक) पर अपना भाष्य लिखा।
- उनका भाष्य आज भी वेदों की पारंपरिक, कर्मकांडीय और यज्ञपरक व्याख्या का सबसे प्रामाणिक स्रोत माना जाता है।
- उन्होंने वेदों के अर्थ को सुगम बनाने के उद्देश्य से एक विशाल विद्वान मंडली के सहयोग से यह महान कार्य संपन्न किया।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- वेदार्थ प्रकाश: उनके द्वारा रचित वेद-भाष्यों को समग्र रूप से 'वेदार्थ प्रकाश' (वेदों के अर्थ का प्रकाश) कहा जाता है।
- यज्ञपरक व्याख्या: उनकी भाष्य-पद्धति मुख्य रूप से यज्ञपरक या कर्मकांडीय है। वे मंत्रों का अर्थ उस यज्ञ के संदर्भ में स्पष्ट करते हैं जहाँ उनका विनियोग होता है।
- व्याकरणिक विश्लेषण: वे प्रत्येक मंत्र के शब्दों का पदपाठ, व्याकरणिक टिप्पणी (प्रकृति, प्रत्यय, संधि, समास) और धातु-अर्थ स्पष्ट करते हैं।
- अर्थ की स्पष्टता: उनका मुख्य उद्देश्य मंत्रों के अर्थ को इतना स्पष्ट करना था कि यज्ञ करने वाले पुरोहित उन्हें आसानी से समझ सकें और यज्ञों को सही ढंग से संपन्न कर सकें।

- पारंपरिक अर्थ का संरक्षण: सायण के भाष्य ने वेदों के उस पारंपरिक अर्थ को संरक्षित किया जो यज्ञ-परंपरा में गुरु-शिष्य प्रणाली के माध्यम से जीवित था।
- संपूर्ण वेदों पर भाष्य: वे एकमात्र ऐसे भाष्यकार हैं जिन्होंने चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) की संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों पर विस्तृत भाष्य लिखा है।
- पूर्वमीमांसा का प्रभाव: उनकी व्याख्या पर पूर्वमीमांसा दर्शन का गहरा प्रभाव है, जो यज्ञ और कर्मकांड के महत्व पर बल देता है।
- ऐतिहासिक संदर्भ: वे अपने भाष्य में कहीं-कहीं कथाओं और ऐतिहासिक संदर्भों का भी उल्लेख करते हैं, जिससे अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- ऋग्वेदभाष्यम्
- कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयसंहिताभाष्यम्
- सामवेदभाष्यम्
- अथर्ववेदभाष्यम्
- उन्होंने लगभग सभी प्रमुख ब्राह्मण और आरण्यक ग्रंथों पर भी भाष्य लिखे।

रोचक तथ्य

- सायणाचार्य अपने भाई माधवाचार्य (जो बाद में संन्यासी बनकर विद्यारण्य स्वामी कहलाए) के साथ मिलकर विजयनगर साम्राज्य के एक शक्तिशाली प्रधानमंत्री थे। यह माना जाता है कि उनके भाष्य-लेखन की विशाल परियोजना को राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

3. मैक्स मूलर (Friedrich Max Müller)

परिचय

- वे 19वीं शताब्दी के जर्मनी में जन्मे एक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री, प्राच्यविद् और धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के प्रणेता थे।
- उन्होंने अपना अधिकांश अकादमिक जीवन इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में बिताया।
- वे भारतविद्या (Indology) और तुलनात्मक भाषा विज्ञान के संस्थापकों में से एक माने जाते हैं।
- उन्होंने सायणाचार्य के भाष्य के साथ ऋग्वेद का पहला प्रामाणिक और संपादित संस्करण प्रकाशित किया, जिसने पश्चिमी जगत में वेदों के अध्ययन की नींव रखी।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- उनका कार्य वेदों के प्रति पश्चिमी दृष्टिकोण को आकार देने में अत्यधिक प्रभावशाली रहा।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- ऋग्वेद का संपादन: उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य सायणाचार्य के भाष्य के साथ 'ऋग्वेद संहिता' का आलोचनात्मक संपादन और प्रकाशन था, जिसमें 6 विशाल खंड थे।
- तुलनात्मक भाषा विज्ञान: उन्होंने वैदिक संस्कृत की तुलना ग्रीक, लैटिन जैसी यूरोपीय भाषाओं से करके इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की अवधारणा को पुष्ट किया।
- प्रकृति-प्रतीकवाद (Nature-Mythology): उन्होंने वेदों की व्याख्या एक प्रकृतिवादी दृष्टिकोण से की। उनके अनुसार, वैदिक देवता (जैसे इंद्र, सूर्य, उषा) प्रकृति की शक्तियों (तूफान, सूर्य, भोर) के मानवीकृत रूप हैं।
- हेनोथीज्म (Henotheism): उन्होंने वैदिक धर्म को परिभाषित करने के लिए 'हेनोथीज्म' (एकदेववाद) शब्द का प्रस्ताव किया, जिसका अर्थ है एक समय में एक देवता की सर्वोच्च मानकर पूजा करना, बिना अन्य देवताओं के अस्तित्व को नकारे।
- आर्य सिद्धांत: वे 'आर्यन' को एक भाषाई समूह के रूप में प्रचारित करने वाले प्रमुख विद्वानों में से थे, हालांकि बाद में इस सिद्धांत का दुरुपयोग नस्लवादी आधार पर किया गया।
- धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन: उन्होंने 'Sacred Books of the East' नामक एक विशाल ग्रंथमाला का संपादन किया, जिसमें विश्व के प्रमुख धर्मों के ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हुआ।
- वैदिक काल-निर्धारण: उन्होंने वैदिक साहित्य के विकास के आधार पर इसका काल-निर्धारण करने का प्रयास किया (छंद काल, मंत्र काल, ब्राह्मण काल, सूत्र काल)।
- पश्चिमी दृष्टिकोण: उन्होंने वेदों को एक आदिम, प्राकृतिक और सरल समाज की कविता के रूप में देखा, जो बाद के भारतीय दार्शनिक विकास से भिन्न था।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- Rig-Veda-Sanhita: The Sacred Hymns of the Brahmans (संपादक, 6 खंड, 1849–1874)
- A History of Ancient Sanskrit Literature (1859)
- Sacred Books of the East (संपादक, 50 खंड, 1879-1910)

रोचक तथ्य

- मैक्स मूलर अपने समय के दुनिया के सबसे अग्रणी संस्कृत विद्वानों में से एक होने के बावजूद, उन्होंने कभी भारत की यात्रा नहीं की।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

4. स्वामी दयानन्द सरस्वती

परिचय

- वे 19वीं शताब्दी के एक महान भारतीय समाज सुधारक, धर्मगुरु और आर्य समाज के संस्थापक थे।
- उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान और सभी सत्य विद्याओं का मूल ग्रंथ माना।
- उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का प्रसिद्ध नारा दिया और वेदों पर आधारित एक सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन चलाया।
- उन्होंने सायण आदि भाष्यकारों की यज्ञपरक और पौराणिक व्याख्याओं को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया।
- उनका उद्देश्य वेदों की एक तर्कसंगत, एकेश्वरवादी और आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करना था।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- वेदों की अपौरुषेयता: उनका मानना था कि वेद ईश्वर द्वारा सृष्टि के आरंभ में दिए गए थे और वे किसी मनुष्य की रचना नहीं हैं, इसलिए वे स्वतः प्रमाण हैं।
- एकेश्वरवादी व्याख्या: उन्होंने यह स्थापित किया कि वेद अनेकानेक देवताओं की नहीं, बल्कि एक ही निराकार ईश्वर की उपासना का संदेश देते हैं। विभिन्न देव-नाम (अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण) उसी एक ईश्वर के गुणवाचक नाम हैं।
- कर्मकांड और मूर्तिपूजा का खंडन: उन्होंने वेदों का हवाला देते हुए मूर्तिपूजा, अवतारवाद, श्राद्ध, और जटिल कर्मकांडों को वेद-विरुद्ध और पाखंड बताया।
- आधुनिक विज्ञान वेदों में: उनका एक क्रांतिकारी विचार यह था कि आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी मूल सिद्धांत (जैसे विमान, टेलीग्राफ) वेदों में सांकेतिक रूप में मौजूद हैं।
- योगरूढ़िवादी व्याख्या: उन्होंने शब्दों की व्याख्या के लिए यौगिक अर्थ (धातु से बना अर्थ) पर बल दिया, न कि रूढ़ि अर्थ पर। उदाहरण के लिए, 'अग्नि' का अर्थ केवल आग नहीं, बल्कि 'अग्रणी' होने के कारण ईश्वर भी है।
- सायण की आलोचना: उन्होंने सायण के भाष्य को कर्मकांडपरक और अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाला कहकर उसकी कड़ी आलोचना की।
- सामाजिक सुधार: उन्होंने वेदों के आधार पर जाति-प्रथा, छुआछूत और बाल-विवाह का विरोध किया तथा स्त्री-शिक्षा और विधवा-विवाह का समर्थन किया।
- त्रैतवाद का दर्शन: उनका दर्शन त्रैतवादी है, जो ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन अनादि सत्ताओं को

स्वीकार करता है।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- सत्यार्थ प्रकाश (1875): यह उनका सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसमें उन्होंने अपने सभी सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत किया है।
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (1878): यह ग्रंथ वेदों पर उनके भाष्य की एक विस्तृत भूमिका है, जिसमें उन्होंने अपनी व्याख्या-पद्धति और सिद्धांतों को समझाया है।
- यजुर्वेदभाष्यम् और ***ऋग्वेदभाष्यम् (अपूर्ण)***: उन्होंने यजुर्वेद का संपूर्ण और ऋग्वेद का आंशिक भाष्य अपनी नवीन पद्धति से किया।

रोचक तथ्य

- स्वामी दयानन्द ने अपने विचारों को सिद्ध करने के लिए पूरे भारत में घूम-घूम कर पारंपरिक पंडितों और विद्वानों को सार्वजनिक शास्त्रार्थ (बहस) के लिए चुनौती दी।

5. श्री अरविन्द (Aurobindo Ghose)

परिचय

- वे 20वीं शताब्दी के एक महान भारतीय दार्शनिक, योगी, कवि और राष्ट्रवादी थे।
- उन्होंने वेदों की एक गहन आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और प्रतीकात्मक व्याख्या प्रस्तुत की।
- वेदों के प्रति उनका दृष्टिकोण पारंपरिक (सायण) और पश्चिमी (मैक्स मूलर) दोनों ही व्याख्याओं से बिल्कुल भिन्न था।
- उनके अनुसार, वेद केवल यज्ञ-कर्मकांड के ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों के रहस्यमय अभिलेख हैं।
- उन्होंने अपने दर्शन 'अतिमानसिक योग' (Integral Yoga) की जड़ों को वेदों में खोजा।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक व्याख्या: उन्होंने वेदों को मानव चेतना के विकास और आध्यात्मिक यात्रा के एक प्रतीकात्मक वर्णन के रूप में देखा।
- प्रतीकात्मक अर्थ: उनके अनुसार, वैदिक देवता (जैसे अग्नि, इंद्र, सोम, सूर्य) केवल प्रकृति की शक्तियाँ नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की मनोवैज्ञानिक शक्तियों (जैसे दिव्य इच्छाशक्ति, प्रबुद्ध मन, आनंद) के प्रतीक हैं।

- यज्ञ का आंतरिक अर्थ: उन्होंने वैदिक 'यज्ञ' को एक बाहरी कर्मकांड के बजाय एक आंतरिक साधना माना, जिसमें व्यक्ति अपनी भौतिक चेतना को दिव्य चेतना के प्रति समर्पित करता है।
- "वेद का रहस्य" (The Secret of the Veda): उनका मत था कि ऋषियों ने अपने गहन आध्यात्मिक ज्ञान को प्रतीकों और रूपकों के आवरण में छिपा दिया था, ताकि वह केवल दीक्षित और योग्य साधकों को ही प्राप्त हो सके।
- पाणि और वृत्र: उन्होंने वेदों में वर्णित असुरों (जैसे वृत्र, पाणि) को भी मनोवैज्ञानिक बाधाओं का प्रतीक माना, जो आध्यात्मिक प्रगति को रोकते हैं (जैसे वृत्र - अंधकार को ढकने वाला, पाणि - इंद्रिय-चेतना के कंजूस)।
- दोहरी व्याख्या: उन्होंने माना कि वेदों का एक बाहरी (कर्मकांडीय) और एक आंतरिक (आध्यात्मिक) अर्थ है, और आंतरिक अर्थ ही उनका वास्तविक रहस्य है।
- अतिमानसिक सत्य: उनके अनुसार, वेद अतिमानसिक (Supramental) सत्य की ओर संकेत करते हैं, जो मानव चेतना के विकास का अगला चरण है।
- काव्यमय अंतर्दृष्टि: एक कवि होने के कारण, उन्होंने वेदों की काव्यमय सुंदरता और उनकी मंत्र-शक्ति की गहन सराहना की।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- द सीक्रेट ऑफ द वेद (The Secret of the Veda): यह उनकी वेदों पर लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें उन्होंने अपनी प्रतीकात्मक व्याख्या को विस्तार से समझाया है। यह मूल रूप से उनकी पत्रिका 'आर्य' में 1914-1921 के बीच निबंधों की एक श्रृंखला के रूप में प्रकाशित हुई थी।
- हिम्न्स टू द मिस्टिक फायर (Hymns to the Mystic Fire): इसमें उन्होंने अग्नि सूक्तों का अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अनुवाद और व्याख्या की है।

रोचक तथ्य

- एक महान योगी और दार्शनिक बनने से पहले, श्री अरविन्द एक प्रखर क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे और ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे। जेल में हुए एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

1. यास्काचार्य

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	वैदिक व्याकरण और निरुक्त शास्त्र के आदि आचार्य।
मुख्य अवधारणाएँ	- शब्दों का व्युत्पत्तिपरक विश्लेषण - व्याकरण और निरुक्त का समन्वय
प्रमुख कृतियाँ	- निरुक्त
विशेष तथ्य	- संस्कृत शब्दों की व्याख्या का पहला प्रयास यास्काचार्य ने किया।

2. सायणाचार्य

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	वेदों के महान भाष्यकार और दक्षिण भारत के विद्वान।
मुख्य अवधारणाएँ	- वेदों का भाष्य - कर्मकांड की व्याख्या
प्रमुख कृतियाँ	- ऋग्वेद भाष्य - यजुर्वेद भाष्य
विशेष तथ्य	- वेदों की व्याख्या के लिए सायण का कार्य सबसे प्रामाणिक माना जाता है।

3. मैक्स मूलर (Friedrich Max Müller)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	जर्मन विद्वान जिन्होंने भारतीय धर्मों और भाषाओं का गहन अध्ययन किया।
मुख्य अवधारणाएँ	- तुलनात्मक धर्मशास्त्र - भाषाविज्ञान
प्रमुख कृतियाँ	- Sacred Books of the East (1879–1910)
विशेष तथ्य	- भारत में वैदिक अध्ययन को यूरोप में प्रसिद्ध करने का श्रेय मैक्स मूलर को जाता है।

4. स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	आर्य समाज के संस्थापक और वेदों की ओर लौटने के समर्थक।
मुख्य अवधारणाएँ	- वेदों की सर्वोच्चता - सामाजिक सुधार - मूर्तिपूजा विरोध
प्रमुख कृतियाँ	- सत्यार्थ प्रकाश (1875)
विशेष तथ्य	- उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई।

5. श्री अरविन्द (Aurobindo Ghose) (1872–1950)

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	भारतीय दार्शनिक, योगी और राष्ट्रवादी नेता।
मुख्य अवधारणाएँ	- एकात्म योग - आध्यात्मिक विकास - राष्ट्रवाद
प्रमुख कृतियाँ	- Life Divine (1914) - Savitri - Essays on the Gita
विशेष तथ्य	- श्री अरविन्द आश्रम (पुदुचेरी) की स्थापना की और वहाँ से योगिक साधना की।

संस्कृत Important Books & Table

1. **ऋग्वेद संहिता** (वैदिक काल): सबसे प्राचीन वेद, जिसमें देवताओं की स्तुति में रचे गए 1028 सूक्त हैं। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल स्रोत है।
2. **शतपथ ब्राह्मण** (वैदिक काल): शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध यह सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थ है, जिसमें यज्ञ और दार्शनिक विषयों का विस्तृत वर्णन है।
3. **कठोपनिषद्** (वैदिक काल): कृष्ण यजुर्वेद से संबद्ध यह उपनिषद् यम और नचिकेता के संवाद के माध्यम से आत्मा और मृत्यु के रहस्य का विवेचन करता है।
4. **अष्टाध्यायी** (सूत्र काल) - पाणिनि: संस्कृत व्याकरण का आधार स्तंभ, जिसने लगभग 4000 सूत्रों में संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक रूप से नियमबद्ध किया।
5. **निरुक्त** (सूत्र काल) - यास्क: वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ बताने वाला यह ग्रन्थ वेदांगों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।
6. **रामायण** (आर्ष काव्य) - वाल्मीकि: संस्कृत का आदिकाव्य, जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन का वर्णन है।
7. **महाभारत** (आर्ष काव्य) - व्यास: विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य, जिसमें कौरवों और पांडवों की कथा के साथ-साथ 'भगवद्गीता' जैसा दार्शनिक संवाद भी है।
8. **नाट्यशास्त्र** (शास्त्र) - भरत मुनि: भारतीय नाट्य और काव्यशास्त्र का विश्वकोश, जिसमें रस सिद्धान्त का प्रथम विवेचन मिलता है।
9. **स्वप्नवासवदत्तम्** (नाटक) - भास: भास के नाटकों में सर्वश्रेष्ठ, जो राजा उदयन और वासवदत्ता की प्रेम कथा पर आधारित है।
10. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (नाटक) - कालिदास: विश्व साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में से एक, जिसमें राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रेम, विरह और पुनर्मिलन की कहानी है।
11. **मृच्छकटिकम्** (प्रकरण) - शूद्रक: एक अनोखा प्रकरण (नाटक), जिसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसंतसेना की प्रेम कथा के साथ तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण है।
12. **रघुवंशम्** (महाकाव्य) - कालिदास: इसमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक सूर्यवंशी इक्ष्वाकु वंश के राजाओं का वर्णन है।
13. **कुमारसंभवम्** (महाकाव्य) - कालिदास: शिव-पार्वती के विवाह और कुमार कार्तिकेय के जन्म की कथा पर आधारित महाकाव्य।
14. **किरातार्जुनीयम्** (महाकाव्य) - भारवि: 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध यह महाकाव्य अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

प्राप्ति के लिए की गई तपस्या पर आधारित है।

15. **शिशुपालवधम्** (महाकाव्य) - माघ: यह महाकाव्य श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा का वर्णन करता है और अपने पाण्डित्यपूर्ण वर्णन के लिए विख्यात है।
16. **नैषधीयचरितम्** (महाकाव्य) - श्रीहर्ष: 'बृहत्त्रयी' का सबसे बड़ा और क्लिष्ट महाकाव्य, जिसमें नल और दमयन्ती की कथा का वर्णन है।
17. **मेघदूतम्** (खण्डकाव्य) - कालिदास: एक यक्ष द्वारा मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजने की कल्पना पर आधारित एक उत्कृष्ट गीतिकाव्य।
18. **गीतगोविन्द** (गीतिकाव्य) - जयदेव: राधा-कृष्ण के प्रेम और रासलीला पर आधारित मधुर और संगीतात्मक काव्य।
19. **कादम्बरी** (गद्यकाव्य) - बाणभट्ट: संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना, जो अपने जटिल वाक्यों और विस्तृत वर्णनों के लिए प्रसिद्ध है।
20. **दशकुमारचरितम्** (गद्यकाव्य) - दण्डी: दस कुमारों के विचित्र अनुभवों और यात्राओं का मनोरंजक वर्णन करने वाला गद्यकाव्य।
21. **मुद्राराक्षसम्** (नाटक) - विशाखदत्त: चाणक्य की राजनीतिक कूटनीति का वर्णन करने वाला एक जासूसी और राजनीतिक नाटक, जिसमें नायिका का अभाव है।
22. **उत्तररामचरितम्** (नाटक) - भवभूति: 'करुण रस' के सर्वश्रेष्ठ नाटक के रूप में प्रसिद्ध, जो राम के उत्तर-जीवन की कथा पर आधारित है।
23. **मनुस्मृति** (धर्मशास्त्र) - मनु: भारतीय आचार-संहिता और सामाजिक नियमों पर आधारित सबसे प्राचीन और प्रामाणिक स्मृति-ग्रन्थ।
24. **अर्थशास्त्र** (शास्त्र) - कौटिल्य (चाणक्य): राजनीति, अर्थनीति और शासन-कला पर लिखा गया एक अद्वितीय ग्रन्थ।
25. **योगसूत्र** (दर्शन) - पतञ्जलि: योग दर्शन का मूल ग्रन्थ, जिसमें चित्तवृत्तियों के निरोध के उपाय बताए गए हैं।
26. **सांख्यकारिका** (दर्शन) - ईश्वरकृष्ण: सांख्य दर्शन के सिद्धांतों को 72 कारिकाओं (श्लोकों) में प्रस्तुत करने वाला प्रमुख ग्रन्थ।
27. **ब्रह्मसूत्र** (दर्शन) - बादरायण: वेदान्त दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ, जो उपनिषदों के दार्शनिक विचारों को सूत्रों में प्रस्तुत करता है।
28. **काव्यप्रकाश** (काव्यशास्त्र) - मम्मट: काव्यशास्त्र का एक अत्यंत प्रामाणिक और प्रभावशाली ग्रन्थ, जिसमें ध्वनि सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन है।
29. **साहित्यदर्पण** (काव्यशास्त्र) - विश्वनाथ: काव्यशास्त्र के सभी प्रमुख विषयों का सरल और व्यवस्थित रूप से

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

विवेचन करने वाला ग्रन्थ।

30. **ध्वन्यालोक** (काव्यशास्त्र) - आनन्दवर्धन: 'ध्वनि सिद्धान्त' की स्थापना करने वाला यह ग्रन्थ काव्यशास्त्र में एक युगांतकारी रचना मानी जाती है।

1: चारों वेदों का सामान्य परिचय

वेद	ऋत्विक् (पुरोहित)	प्रमुख देवता	विषय-वस्तु	प्रमुख शाखा
ऋग्वेद	होता	अग्नि, इन्द्र, सोम	देवताओं की स्तुति में रचे गए मन्त्र (ऋचाएँ)।	शाकल
यजुर्वेद	अध्वर्यु	विष्णु, प्रजापति	यज्ञ-सम्बन्धी गद्यात्मक और पद्यात्मक मन्त्र।	कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद
सामवेद	उद्गाता	सविता (सूर्य)	यज्ञ के अवसर पर गाए जाने वाले गेय मन्त्र।	कौथुम, राणायनीय, जैमिनीय
अथर्ववेद	ब्रह्मा	रुद्र, ब्रह्म	लौकिक विषय, जैसे- रोग निवारण, मारण, मोहन, वशीकरण, ब्रह्मज्ञान।	शौनक, पैप्पलाद

2: ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्

साहित्य का प्रकार	मुख्य विषय	प्रमुख उदाहरण
ब्राह्मण ग्रन्थ	यज्ञों की कर्मकाण्डीय और विध्यात्मक व्याख्या।	**ऋग्वेद:** ऐतरेय, कौषीतकि; **यजुर्वेद:** शतपथ, तैत्तिरीय; **सामवेद:** ताण्ड्य; **अथर्ववेद:** गोपथ
आरण्यक	यज्ञों के रहस्यात्मक और दार्शनिक पक्षों का विवेचन, जो वनों में पढ़े जाते थे।	ऐतरेय आरण्यक, तैत्तिरीय आरण्यक
उपनिषद् (वेदान्त)	ब्रह्म, आत्मा, सृष्टि और मोक्ष जैसे गूढ़ दार्शनिक विषयों का विवेचन।	ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक

3: वेदांग (वेद के सहायक अंग)

वेदांग	अर्थ	विषय	प्रमुख ग्रन्थ
शिक्षा	शुद्ध उच्चारण	वर्ण, स्वर, मात्रा आदि के उच्चारण की विधि।	पाणिनि शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा
कल्प	कर्मकाण्ड	यज्ञों और अन्य धार्मिक-सामाजिक कर्तव्यों को करने की विधि। (श्रौत, गृह्य, धर्म, शुल्ब सूत्र)	बौधायन श्रौतसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र
व्याकरण	भाषा का विश्लेषण	शब्द-सिद्धि और भाषा के नियमों का विवेचन।	पाणिनि की 'अष्टाध्यायी'
निरुक्त	शब्दों की व्युत्पत्ति	वैदिक शब्दों का अर्थ और उनकी व्युत्पत्ति बताना।	यास्क का 'निरुक्त'
छन्द	पद्य रचना के नियम	वैदिक मन्त्रों के गायन और लय को नियमित करना।	पिंगल का 'छन्दःशास्त्र'
ज्योतिष	खगोलीय गणना	यज्ञों और अनुष्ठानों के लिए शुभ मुहूर्त का निर्धारण।	लगध का 'वेदांग ज्योतिष'

4: ऋग्वेद के प्रमुख संवाद सूक्त

सूक्त का नाम	ऋग्वेद मण्डल	पात्र (संवाद करने वाले)	विषय
पुरूरवा-उर्वशी संवाद	10.95	राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी	प्रेम और विरह का मार्मिक संवाद।
यम-यमी संवाद	10.10	भाई यम और बहन यमी	यमी द्वारा यम से विवाह का प्रस्ताव और यम द्वारा उसका नैतिक आधार पर खंडन।
सरमा-पणि संवाद	10.108	देवशुनी (इन्द्र की दूती)	पणियों द्वारा चुराई गई

		सरमा और पणि नामक असुर	गायों को वापस लौटाने का संवाद।
विश्वामित्र-नदी संवाद	3.33	ऋषि विश्वामित्र और विपाशा (व्यास) एवं शुतुद्री (सतलुज) नदियाँ	ऋषि द्वारा नदियों से सुरक्षित रास्ता देने की प्रार्थना।

UNIT WISE THEORY NOTES

ALL SUBJECT AND PAPER I

UGC NET

BOTH MEDIUM AVAILABLE

+91-76900-22111 +91-92162-28788

यूजीसी नेट संस्कृत - मॉडल पेपर

प्रश्नः 1 (मेलनप्रकारः):

सूची-I इत्यनया सह सूची-II इत्यस्याः मेलनं कुरुत -

सूची-I (ग्रन्थः)	**सूची-II (ग्रन्थकारः)**
A. काव्यप्रकाशः	I. विश्वनाथः
B. साहित्यदर्पणः	II. मम्मटः
C. ध्वन्यालोकः	III. आनन्दवर्धनः
D. दशरूपकम्	IV. धनञ्जयः

विकल्पाः:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-II, B-I, C-IV, D-III
(d) A-III, B-IV, C-I, D-II

उत्तरम्: (b) A-II, B-I, C-III, D-IV

व्याख्यानम्:

- अयं प्रश्नः संस्कृत-काव्यशास्त्रस्य प्रमुखग्रन्थानां तेषां च रचयितृणां ज्ञानं परीक्षते।
- **काव्यप्रकाशः** आचार्यमम्मटेन विरचितः प्रसिद्धः काव्यशास्त्रीयः ग्रन्थः अस्ति।
- **साहित्यदर्पणः** आचार्यविश्वनाथेन लिखितः, यस्मिन् काव्यस्य लक्षणं, भेदाः, रसादयश्च विस्तरेण वर्णिताः।
- **ध्वन्यालोकः** आचार्य-आनन्दवर्धनेन रचितः, यः ध्वनि-सिद्धान्तस्य प्रतिष्ठापकः ग्रन्थः मन्यते।
- **दशरूपकम्** धनञ्जयेन लिखितं नाट्यशास्त्रसम्बन्धि प्रकरणम् अस्ति, यत्र रूपकाणां (नाटकानां) दशप्रकाराणां विवेचनं कृतम्।

प्रश्नः 2 (अभिकथन-तर्क-प्रकारः):

अधः द्वे कथनौ दत्ते स्तः, एकम् अभिकथनम् (A) अपरं च तर्कः (R) इति।

- **अभिकथनम् (A):** सांख्यदर्शने प्रकृतिः जगतः मूलकारणम् अस्ति।
- **तर्कः (R):** प्रकृतौ सत्त्व-रजस्-तमोगुणानां साम्यावस्था एव प्रकृतिः, तस्याः विकारेण एव जगत् उत्पद्यते।

विकल्पाः:

(a) (A) तथा (R) उभौ सत्यौ स्तः, (R) इति (A) इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।
(b) (A) तथा (R) उभौ सत्यौ स्तः, परन्तु (R) इति (A) इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति।
(c) (A) सत्यम् अस्ति, परन्तु (R) असत्यम् अस्ति।
(d) (A) असत्यम् अस्ति, परन्तु (R) सत्यम् अस्ति।

PROFESSORS ADDA

उत्तरम्: (a) (A) तथा (R) उभौ सत्यौ स्तः, (R) इति (A) इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।

व्याख्यानम्:

- सांख्यदर्शनस्य मूलभूतसिद्धान्तेषु प्रकृतिः जगतः उपादानकारणत्वेन स्वीकृता अस्ति। अतः अभिकथनं (A) सत्यम्।
- प्रकृतिः त्रिगुणात्मिका (सत्त्व-रजस्-तमस्) इति मन्यते।
- एतेषां गुणानां साम्यावस्था एव 'प्रकृतिः' अथवा 'प्रधानम्' इति कथ्यते।
- यदा एषा साम्यावस्था पुरुषस्य सान्निध्यात् भिद्यते, तदा गुणेषु वैषम्यम् उत्पद्यते।
- अस्मात् गुणवैषम्यात् एव महत्तत्त्वम्, अहंकारः, पञ्चतन्मात्राणि इत्यादिक्रमेण समस्तस्य जगतः उत्पत्तिः भवति। अतः तर्कः (R) अभिकथनस्य (A) समीचीनां व्याख्यां करोति।

प्रश्नः 3 (बहुविकल्पीय-उत्तर-प्रकारः):

अधोदत्तेषु वेदान्तसारानुसारं किं किं साधनचतुष्टये अन्तर्भवति?

A. नित्यानित्यवस्तुविवेकः

B. इहामुत्रार्थफलभोगविरागः

C. शमादिषट्कसम्पत्तिः

D. मुमुक्षुत्वम्

E. तत्त्वमसि-महावाक्यविचारः

समुचितं विकल्पं चिनुत:

(a) A, B, C केवलम्

(b) B, C, D, E केवलम्

(c) A, B, C, D केवलम्

(d) A, C, D, E केवलम्

उत्तरम्: (c) A, B, C, D केवलम्

व्याख्यानम्:

- वेदान्तशास्त्रे ब्रह्मज्ञानस्य अधिकारिप्राप्तये साधनचतुष्टयस्य आवश्यकता प्रतिपादिता अस्ति।
- एतानि चत्वारि साधनानि क्रमेण सन्ति:
  1. **नित्यानित्यवस्तुविवेकः:** ब्रह्म एव नित्यं वस्तु, तद्भिन्नं सर्वम् अनित्यम् इति निश्चयः। (A)
  2. **इहामुत्रार्थफलभोगविरागः:** अस्मिन् लोके परलोके च कर्मफलानां भोगे आसक्तिराहित्यम्। (B)
  3. **शमादिषट्कसम्पत्तिः:** शमः, दमः, उपरतिः, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधानम् इति षट् सम्पत्तयः। (C)
  4. **मुमुक्षुत्वम्:** मोक्षं प्राप्तुम् उत्कटा इच्छा। (D)
- 'तत्त्वमसि'-महावाक्यविचारः श्रवण-मनन-निदिध्यासनस्य भागः अस्ति, न तु साक्षात् साधनचतुष्टयस्य। अतः E नास्ति।

PROFESSORS ADDA

- अतः A, B, C, D इति चत्वारः विकल्पाः साधनचतुष्टये अन्तर्भवन्ति।

प्रश्नः 4 (गद्यांश-आधारितः):
गद्यांशं पठित्वा प्रश्नस्य उत्तरं ददातु:
"मन्त्राणां च प्रयोगसमवेतार्थस्मारकतयार्थवत्वम्। न तु तदुच्चारणमदृष्टार्थम् । दृष्टे सम्भवति अदृष्टस्यान्याय्यत्वात् । न च दृष्टस्य प्रकारान्तरेणापि संभवान्मन्त्राम्नानमनर्थकम् । मन्त्रैरेव स्मर्तव्यमिति नियमविध्याश्रयणात्। साधनद्वयस्य पक्षप्राप्तौ अन्यतरस्य साधनस्याप्राप्ततादशायां यो विधिः स नियमविधिः।"
प्रश्नः: मन्त्राणाम् आम्नानम् अनर्थकं कुतो नास्ति?
(a) यतः तेषाम् उच्चारणम् अदृष्टफलं जनयति।
(b) यतः तेषां स्मरणं प्रकारान्तरेण अपि सम्भवति।
(c) यतः 'मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्' इति नियमविधिः आश्रीयते।
(d) यतः ते प्रयोगसमवेतार्थस्य स्मारकाः न सन्ति।

उत्तरम्: (c) यतः 'मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्' इति नियमविधिः आश्रीयते।
व्याख्यानम्:
- गद्यांशे स्पष्टतया उक्तं यत् मन्त्राणां प्रयोजनं प्रयोगकाले सम्बद्धस्य अर्थस्य स्मरणं कारयितुम् अस्ति (प्रयोगसमवेतार्थस्मारकतयार्थवत्वम्)।
- यद्यपि अर्थस्मरणं प्रकारान्तरेण (अन्यसाधनैः) अपि सम्भवति, तथापि मन्त्राम्नानम् अनर्थकं नास्ति।
- कारणम् अस्ति यत् शास्त्रे 'मन्त्रैः एव स्मर्तव्यम्' इति नियमविधिः स्वीकृतः।
- नियमविधिः तदा प्रयुज्यते यदा कस्यचित् कार्यस्य सिद्धये एकाधिकसाधनानि प्राप्तानि भवन्ति, परन्तु शास्त्रं तेषु एकस्य एव साधनस्य प्रयोगं नियमयति।
- अत्र अर्थस्मरणरूपकार्यस्य सिद्धये यद्यपि अन्यसाधनानि सन्ति, तथापि शास्त्रं मन्त्ररूपसाधनम् एव नियमयति। अतः मन्त्राम्नानं सार्थकम्।

प्रश्नः 5 (गद्यांश-आधारितः):
(पूर्वोक्तं गद्यांशम् एव आश्रित्य)
प्रश्नः: नियमविधिः कदा प्रवर्तते?
(a) यदा कस्यचित् कार्यस्य साधनम् अत्यन्तम् अप्राप्तं भवति।
(b) यदा कस्यचित् कार्यस्य सिद्धये द्वयोः साधनयोः पक्षतः प्राप्तिः भवति।
(c) यदा दृष्टफलं न सम्भवति, केवलम् अदृष्टफलम् एव भवति।
(d) यदा श्रोतुः जिज्ञासा न भवति।

PROFESSORS ADDA

उत्तरम्: (b) यदा कस्यचित् कार्यस्य सिद्धये द्वयोः साधनयोः पक्षतः प्राप्तिः भवति।

व्याख्यानम्:

- गद्यांशे नियमविधेः लक्षणं स्पष्टतया दत्तम् अस्ति - "साधनद्वयस्य पक्षप्राप्तौ अन्यतरस्य साधनस्याप्राप्ततादशायां यो विधिः स नियमविधिः।"
- अस्य अर्थः अस्ति यत् यदा किमपि कार्यं द्वाभ्यां वा अधिकैः साधनैः कर्तुं शक्यते (पक्षप्राप्तिः), तदा शास्त्रं यदि एकं साधनं नियमयति, सः नियमविधिः।
- उदाहरणार्थम्, व्रीहीणां तुषविमोचनम् अवघातेन (मूसलेन कुट्टनेन) नखविदलनेन वा कर्तुं शक्यते। उभयोः पक्षतः प्राप्तौ शास्त्रं 'व्रीहीन् अवहन्ति' इति अवघातम् एव नियमयति।
- अतः यदा कार्यसिद्धये एकाधिकसाधनानां विकल्पः (पक्षप्राप्तिः) भवति, तदा नियमविधिः प्रवर्तते।
- अत्यन्तम् अप्राप्तस्य विधानम् अपूर्वविधिः करोति (यथा 'यजेत स्वर्गकामः')।

प्रश्नः 6 (सरल-बहुविकल्पीयः):

'अष्टाध्यायी' इत्यस्य ग्रन्थस्य कर्ता कः?

(a) पतञ्जलिः

(b) कात्यायनः

(c) पाणिनिः

(d) भट्टोजिदीक्षितः

उत्तरम्: (c) पाणिनिः

व्याख्यानम्:

- 'अष्टाध्यायी' संस्कृतव्याकरणस्य सर्वप्रमुखः आधारभूतश्च ग्रन्थः अस्ति।
- अस्य ग्रन्थस्य रचना महर्षिणा पाणिनिना कृता।
- अस्मिन् ग्रन्थे अष्टौ अध्यायाः सन्ति, प्रत्येकम् अध्याये चत्वारः पादाः सन्ति।
- सूत्रात्मिकायां शैल्यां लिखितेऽस्मिन् ग्रन्थे प्रायः ४००० सूत्राणि सन्ति।
- पतञ्जलिना महाभाष्यं, कात्यायनेन वार्तिकानि च अस्य उपरि लिखितानि।

प्रश्नः 7 (अभिकथन-तर्क-प्रकारः):

- **अभिकथनम् (A):** न्यायदर्शने प्रत्यक्षम् एव एकमात्रं प्रमाणं स्वीकृतम्।
- **तर्कः (R):** यतः चार्वाकदर्शनम् अपि प्रत्यक्षम् एव एकमात्रं प्रमाणं स्वीकरोति।

विकल्पाः:

(a) (A) तथा (R) उभौ सत्यौ स्तः, (R) इति (A) इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति।

(b) (A) तथा (R) उभौ सत्यौ स्तः, परन्तु (R) इति (A) इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति।

(c) (A) सत्यम् अस्ति, परन्तु (R) असत्यम् अस्ति।

PROFESSORS ADDA

(d) (A) असत्यम् अस्ति, परन्तु (R) सत्यम् अस्ति।

उत्तरम्: (d) (A) असत्यम् अस्ति, परन्तु (R) सत्यम् अस्ति।

व्याख्यानम्:

- न्यायदर्शनं प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द-भेदेन चत्वारि प्रमाणानि स्वीकरोति, न तु केवलं प्रत्यक्षम्। अतः अभिकथनम् (A) असत्यम् अस्ति।
- चार्वाकदर्शनं (लोकायतदर्शनम्) वस्तुतः प्रत्यक्षम् एव एकमात्रं प्रमाणं स्वीकरोति, अनुमानदीनि प्रमाणानि न स्वीकरोति। अतः तर्कः (R) सत्यम् अस्ति।
- यद्यपि तर्कः (R) स्वयमेव सत्यः अस्ति, सः असत्यस्य अभिकथनस्य (A) व्याख्या भवितुं नार्हति।

प्रश्नः 8 (मेलनप्रकारः):

सूची-I (वेदः) इत्यनया सह सूची-II (आरण्यकम्) इत्यस्याः मेलनं कुरुत -

सूची-I (वेदः)	**सूची-II (आरण्यकम्)**
A. ऋग्वेदः	I. बृहदारण्यकम्
B. यजुर्वेदः	II. छान्दोग्यारण्यकम्
C. सामवेदः	III. ऐतरेयारण्यकम्
D. अथर्ववेदः	IV. (न उपलभ्यते)

विकल्पाः:

(a) A-III, B-I, C-II, D-IV
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-III, B-II, C-I, D-IV
(d) A-II, B-I, C-III, D-IV

उत्तरम्: (a) A-III, B-I, C-II, D-IV

व्याख्यानम्:

- अयं प्रश्नः वैदिकवाङ्मयस्य आरण्यकग्रन्थानां वेदैः सह सम्बन्धं परीक्षते।
- **ऋग्वेदस्य** प्रमुखे आरण्यके ऐतरेयारण्यकं तथा शाङ्खायनारण्यकम् (कौषीतक्यारण्यकम्) स्तः। (A-III)
- **यजुर्वेदस्य** (शुक्लयजुर्वेदस्य) बृहदारण्यकम् तथा (कृष्णयजुर्वेदस्य) तैत्तिरीयारण्यकं प्रसिद्धे स्तः। (B-I)
- **सामवेदस्य** छान्दोग्यारण्यकं (तलवकारारण्यकम्) तथा जैमिनीयारण्यकं स्तः। (C-II)
- **अथर्ववेदस्य** किमपि स्वतन्त्रम् आरण्यकं सामान्यतः न उपलभ्यते। (D-IV)

प्रश्नः 9 (बहुविकल्पीय-उत्तर-प्रकारः):

PROFESSORS ADDA

अधोदत्तेषु कानि कानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति?

A. आकाशः

B. कालः

C. वायुः

D. दिक्

E. तेजः

समुचितं विकल्पं चिनुत:

(a) A, B, C केवलम्

(b) A, C, E केवलम्

(c) B, C, D केवलम्

(d) A, D, E केवलम्

उत्तरम्: (b) A, C, E केवलम्

व्याख्यानम्:

- भारतीयदर्शनेषु (विशेषतः सांख्य-न्याय-वैशेषिकेषु) सृष्टेः मूलभूतानि पञ्चतत्त्वानि 'पञ्चमहाभूतानि' इति कथ्यन्ते।
- एतानि क्रमेण सन्ति - पृथ्वी, अप् (जलम्), तेजः, वायुः, आकाशः।
- प्रदत्तेषु विकल्पेषु आकाशः (A), वायुः (C), तेजः (E) च पञ्चमहाभूतेषु अन्तर्भवन्ति।
- कालः (B) तथा दिक् (D) न्याय-वैशेषिकदर्शनेषु पृथक् द्रव्यत्वेन स्वीकृते स्तः, न तु महाभूतत्वेन।
- अतः समुचितः विकल्पः (b) अस्ति।

प्रश्नः 10 (सरल-बहुविकल्पीयः):

'किरातार्जुनीयम्' इति महाकाव्यस्य रचयिता कः?

(a) कालिदासः

(b) भारविः

(c) माघः

(d) श्रीहर्षः

उत्तरम्: (b) भारविः

व्याख्यानम्:

- 'किरातार्जुनीयम्' संस्कृतसाहित्यस्य बृहत्त्रय्यां परिगणितं प्रसिद्धं महाकाव्यम् अस्ति।
- अस्य महाकाव्यस्य रचयिता महाकविः भारविः अस्ति।
- अस्मिन् अष्टादशसर्गाः सन्ति।
- महाभारतस्य वनपर्वणः कथामाधारीकृत्य अस्य रचना कृता।

PROFESSORS ADDA